हरिभूमि
झज्जर-बहादुरगढ़ भूमि
रोहतक, रविवार, 30 नवंबर 2025

9 दो दिवसीय मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा समारोह का हुआ आगाज...

10 मंत्रोच्चार, नगाड़े व गीता आधारित लोक गीतों से गूंजा गीतापुरम

SANSKARAM GROUP OF SCHOOLS

THE TIMES OF INDIA
Awarded with
Times School Survey
award 2025-26

Presents

10th ALL INDIA OLYMPIAD

Chance to Win 500+ Prizes

SCAN FOR REGISTRATION

Class	1st Prize	2nd Prize	3rd Prize	4th to 30th Prize	30th to 40th Prize
10th Class	Scooty	Laptop	Kindle	Sports Kit	Edu. Kits/ Gifts
9th Class	Laptop	Kindle	Kindle	Sports Kit	Edu. Kits/ Gifts
8th Class	Laptop	Kindle	Cycle	Sports Kit	Edu. Kits/ Gifts
7th Class	Laptop	Kindle	Cycle	Sports Kit	Edu. Kits/ Gifts
6th Class	Laptop	Kindle	Cycle	Sports Kit	Edu. Kits/ Gifts
5th Class	Kindle	Cycle	Cycle	Sports Kit	Edu. Kits/ Gifts
4th Class	Kindle	Cycle	Cycle	Sports Kit	Edu. Kits/ Gifts
3rd Class	Kindle	Cycle	Cycle	Sports Kit	Edu. Kits/ Gifts

EXAM DATE
28th DECEMBER 2025

FREE TRANSPORT

Class	Subject (Equal Weightage to All subjects)	Marks	Duration
3rd to 5th Class	English\Maths\GK\EVS	60	60 Min.
6th & 8th Class	English\Maths\Science\ Aptitude Test	60	60 Min.
9th & 10th Class	Science (Physics,Chemistry, Bio)\Math	80	60 Min.

Whirling
With Young Talent
And Creativity

Visionary Vertex

COMPETITION DETAILS

NURSERY	Poem Recitation (in Hindi or Eng.) with proper gestures.
L.K.G	Story Telling (in Hindi or Eng.) with proper gestures.
U.K.G	Art & Craft Test and Hindi English Word Making
1st & 2nd	Written Test in English, E.V.S., Maths, G.K., and Reasoning.

Sanskaram Olympiad
Applicable for 3rd to 10th

Visionary Vertex
Applicable for Nur. to 2nd

FEE
100/-

TIMING
10 AM to 12 PM

VENUE
Sanskaram Public School, Khatiwas
Sanskaram International School, Pataudа

For Online Registration Visit
www.sanskarampublicschool.com | www.sanskaraminternational.com

बहादुरगढ़। कार्यशाला में स्कूल स्टॉफ के साथ मधुलिका सिंह। फोटो: हरिभूमि

नप ने सुप्रीम कोर्ट के आदेशों की पालना के लिए पार्षदों से मांगे जगह के सुझाव

बहादुरगढ़ में बनेंगे स्ट्रे डॉग्स के लिए डेडिकेटेड फीडिंग जोन

पत्र में कहा गया है कि प्रत्येक पार्षद अपने-अपने वार्ड में ऐसी उपयुक्त जगह पहचानें, जहां स्ट्रे डॉग्स को व्यवस्थित ढंग से भोजन कराया जा सके

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

बहादुरगढ़। शहर की गलियों में जमा कुत्तों का झुंड। फोटो: हरिभूमि

शहर में आवारा कुत्तों (स्ट्रे डॉग्स) से जुड़ी समस्याओं के समाधान तथा उनके व्यवस्थित संरक्षण के लिए नगर परिषद ने महत्वपूर्ण प्रक्रिया शुरू कर दी है। सुप्रीम कोर्ट के आदेशों की पालना करते हुए बहादुरगढ़ नगर परिषद सभी 1 से 31 वार्डों में स्ट्रे डॉग्स के लिए डेडिकेटेड फीडिंग जोन निर्धारित करने जा रही है।

नगर परिषद के कार्यकारी अधिकारी अरुण नांदल ने चेयरपर्सन सरोज राठी सहित सभी 31 पार्षदों को पत्र लिखा है। पत्र में कहा गया है कि प्रत्येक पार्षद अपने-अपने वार्ड में ऐसी उपयुक्त जगह पहचानें, जहां स्ट्रे डॉग्स को व्यवस्थित ढंग से भोजन कराया जा सके। पार्षदों को 7 दिन के भीतर चयनित स्थल की जानकारी लिखित में उपलब्ध कराने को कहा गया है। बता दें कि सुप्रीम कोर्ट ने स्ट्रे डॉग्स की कल्याणकारी व्यवस्था और नागरिकों की सुरक्षा दोनों को ध्यान में रखते हुए देशभर के शहरी निकायों को यह व्यवस्था लागू करने के निर्देश दिए हैं।

ईओ अरुण नांदल ने बताया कि डेडिकेटेड फीडिंग जोन बनने से कुत्तों को निर्धारित स्थान पर ही भोजन मिलेगा। सड़कों व आवासीय कॉलोनियों में अव्यवस्थित खुराक देने की समस्या कम होगी। कुत्तों का एक स्थान पर इकट्ठा होना आसान होगा, जिससे उनकी वैक्सीनेशन और स्टेरिलाइजेशन प्रक्रिया सुचारू चलेगी। नागरिकों और पशु प्रेमियों के बीच विवाद की स्थितियां भी कम होंगी। नगर परिषद ने अपने पत्र के साथ 10 मार्च 2023 को पशुपालन एवं डेयरी विभाग द्वारा जारी अधिसूचना की कॉपी भी संलग्न की है। इस अधिसूचना में स्ट्रे डॉग्स के भोजन, देखभाल, वैक्सीनेशन, स्टेरिलाइजेशन और उनकी सुरक्षा से संबंधित नियम एवं दिशानिर्देश दिए गए हैं।

नगर परिषद द्वारा भेजे गए पत्र ने इस प्रक्रिया को औपचारिक रूप से गति दे दी है। अब प्रत्येक पार्षद अपने वार्ड की परिस्थितियों, उपलब्ध सार्वजनिक स्थानों और नागरिकों की

ईओ अरुण नांदल

चेयरपर्सन सरोज राठी

सुविधा को ध्यान में रखते हुए उपयुक्त स्थान की पहचान करेंगे। सात दिन के भीतर सभी वार्डों से स्थानों की सूची नगर परिषद को सौंप दी जाएगी, जिसके बाद परिषद इन फीडिंग जोन को आधिकारिक रूप से अधिसूचित करेगी। चेयरपर्सन सरोज राठी के अनुसार बहादुरगढ़ में यह कदम न केवल न्यायालय के निर्देशों का पालन है, बल्कि नागरिक सुरक्षा और पशु कल्याण दोनों की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। नगर परिषद के आगामी सप्ताहों में इस परियोजना को अंतिम रूप देने की उम्मीद है। डेडिकेटेड फीडिंग जोन बनने के बाद कुत्तों को नियमित भोजन मिलेगा। आक्रामक व्यवहार की घटनाएं घटेंगी। स्टेरिलाइजेशन/टीकाकरण कार्यक्रम में आसानी होगी। शहर के आवारा कुत्तों की निगरानी और देखभाल बेहतर ढंग से हो सकेगी।

त्रिवेणी में ज्ञान के सिद्धांत पर हुई कार्यशाला

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

शहर के त्रिवेणी मेमोरियल सीनियर सेकेंडरी स्कूल में शिक्षकों के लिए ज्ञान का सिद्धांत विषय पर एक विशेष कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें शिक्षकों को ज्ञानमीमांसा के मूलभूत सिद्धांतों से परिचित करवाते हुए कक्षा में आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा देने के बारे में समझाया गया।

कार्यशाला का उद्घाटन स्कूल निदेशिका संगीता वर्मा, उपनिदेशिका सुमित्रा महला व प्राचार्य अनिल कुमार ने किया। कार्यशाला में मुख्य वक्ता के रूप में मधुलिका सिंह ज्ञान प्राप्त करने और विभिन्न विषयों के बीच संबंध स्थापित करने पर प्रकाश डाला। उन्होंने विभिन्न इंटरेक्टिव सत्रों और गतिविधियों के माध्यम से शिक्षकों को ज्ञान के विभिन्न तरीकों और ज्ञान के क्षेत्रों पर गंभीर रूप से विचार करने में सक्षम बनाने का प्रयास किया। उन्होंने बताया कि ज्ञान का सिद्धांत छात्र केंद्रित शिक्षा को बढ़ावा देता है, जहां शिक्षक केवल सूचना प्रदाता के बजाय एक समन्वयक की भूमिका निभाते हैं। शिक्षण की गुणवत्ता में सुधार करना और छात्रों में विश्लेषणात्मक व अनुसंधान कौशल विकसित करने के लिए ज्ञान के सिद्धांत की आवश्यकता सदैव रही है। सुमित्रा महला ने कहा कि ज्ञान के सिद्धांत पर आधारित कार्यशाला शिक्षकों को शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में नए क्षितिज तलाशने और विद्यार्थियों को इक्कीसवीं सदी के कौशल के लिए तैयार करने में मदद करेगी।

वैश्य कॉलेज में किया खुशी का स्वागत

बहादुरगढ़। वैश्य आर्य कन्या महाविद्यालय में बीए तृतीय वर्ष की छात्रा खुशी राठी को भोपाल में हुई ऑल इंडिया ओपन शूटिंग चैलेंज टूर्नामेंट में द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कॉलेज प्राचार्या डॉ. राजवंती शर्मा ने इस शानदार प्रदर्शन के लिए खुशी को बधाई दी। महाविद्यालय की प्रबंधन समिति ने भी भविष्य में बेहतर प्रदर्शन की उम्मीद जताई। शारीरिक शिक्षा विभाग की असिस्टेंट प्रोफेसर प्रीति ने भविष्य में भी खुशी को पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन दिया।

बहादुरगढ़। खुशी का स्वागत करती प्रिंसिपल डॉ. राजवंती शर्मा।

बहादुरगढ़। हलवा पूरी का प्रसाद ग्रहण करती छात्राएं। फोटो: हरिभूमि

छात्राओं को बांटा हलवा-पूरी का प्रसाद

बहादुरगढ़। वैश्य आर्य कन्या प्राइमरी विद्यालय में शुक्रवार को विशेष कार्यक्रम आयोजित कर छात्राओं को हलवा-पूरी का प्रसाद वितरित किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य छात्राओं में धार्मिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों को बढ़ावा देना और उन्हें सामूहिक सहयोग की भावना से जोड़ना रहा। विद्यालय स्टाफ की देखरेख में बच्चियों ने शांतिपूर्वक प्रसाद ग्रहण किया। इस दौरान शिक्षकों ने छात्राओं को संस्कार, अनुशासन और स्वच्छता के महत्व के बारे में भी अवगत कराया।

बैठक में सीजीएसटी की समस्याओं पर हुई चर्चा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

कॉन्फेडरेशन ऑफ बहादुरगढ़ इंडस्ट्रीज के प्रतिनिधिमंडल ने सीजीएसटी रोहतक के अतिरिक्त आयुक्त अनूप कुमार के साथ महत्वपूर्ण बैठक की। इसमें उद्योग जगत से जुड़े करदाताओं की समस्याओं और चुनौतियों पर विस्तृत चर्चा की गई।

बैठक में कोबी के कोषाध्यक्ष अशोक कुमार मित्तल ने पंकज वशिष्ठ व गौरव के साथ उद्योग जगत की ओर से उठाए जा रहे मुद्दों को विस्तारपूर्वक रखा। मित्तल ने बताया कि उद्योग सरकार के राजस्व में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं, इसलिए करदाताओं को सुचारु, पारदर्शी और समयबद्ध सेवाएं प्रदान किया जाना अत्यंत आवश्यक है। अतिरिक्त आयुक्त अनूप कुमार ने सभी मुद्दों को गंभीरता से सुना और आश्वस्त किया कि इन समस्याओं को संबंधित बोर्ड के समक्ष अग्रेषित किया जाएगा। उनके अनुसार विभाग उद्योग जगत के साथ लगातार बेहतर समन्वय और सहयोग के लिए प्रतिबद्ध है, ताकि करदाताओं को किसी प्रकार की अनावश्यक असुविधा न हो।

कोबी कोषाध्यक्ष अशोक कुमार मित्तल ने कहा कि ऐसी संवादात्मक बैठकें उद्योग और विभाग के बीच विश्वास एवं पारदर्शिता बढ़ाने में सहायक सिद्ध होती हैं। उन्होंने उम्मीद जताई कि बैठक में उठाए गए मुद्दों पर शीघ्र और सकारात्मक समाधान प्राप्त होंगे।

बहादुरगढ़। अतिरिक्त आयुक्त अनूप कुमार को स्मृति चिह्न देते अशोक मित्तल।

अहलावत ने किया गोसेवा में सहयोग

बहादुरगढ़। राम अहलावत को स्मृति चिह्न भेंट करते गोशाला पदाधिकारी।

बहादुरगढ़। भाजपा किसान मोर्चा के जिलाध्यक्ष राम अहलावत ने बताया कि कुतुबगढ़ गोशाला द्वारा गौ सेवा के लिए दो एम्बुलेंस खरीदी जा रही हैं। इसमें उन्होंने भी अपने सामर्थ्य अनुसार सहयोग राशि गोशाला प्रबंधकों को सौंपी। उन्होंने बताया कि ये एम्बुलेंस घायल व बीमार गोवंश को समय पर उपचार उपलब्ध कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगी। गौशाला के प्रधान और कमेटी सदस्य उनके निवास पर पहुंचे और पगड़ी बांधकर व स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया। राम अहलावत ने कहा कि गौ माता की सेवा के लिए वे आगे भी सहयोग करते रहेंगे।

नेहरू कॉलेज में विद्यार्थियों को दिखाई एचआईवी एड्स पर डॉक्यूमेंट्री

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

झज्जर। राजकीय नेहरू महाविद्यालय में डॉक्यूमेंट्री देखते हुए विद्यार्थी।

राजकीय स्नातकोत्तर नेहरू महाविद्यालय में यूथ रेडक्रॉस और रेड रिबन क्लब के तत्वावधान में विद्यार्थियों को एचआईवी एड्स पर केंद्रित डॉक्यूमेंट्री दिखाई गई। इसका मुख्य उद्देश्य एचआईवी एड्स से संबंधित समुचित जानकारी और जागरूकता प्रदान करना रहा।

इस डॉक्यूमेंट्री के माध्यम से विद्यार्थियों को एचआईवी एड्स के प्रमुख कारणों की जानकारी दी गई और बताया गया कि संक्रमित रक्त या सुई का साझा उपयोग, बिना जांचे रक्त उत्पाद चढ़ाना और संक्रमित मां से बच्चे में संक्रमण इस रोग के मुख्य कारण हैं। विद्यार्थियों को एड्स संक्रमण, बचाव, सामाजिक भ्रांतियों का खंडन और स्वस्थ जीवनशैली के प्रति जागरूक किया गया।

माता के जागरण में देर रात तक झूमे श्रद्धालु

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

शहर के रेलवे रोड स्थित महाराजा अग्रसेन ट्रस्ट परिसर में बीती रात अष्टमी के पावन अवसर पर भव्य देवी दरबार सजा। मां भगवती युवा मित्र मंडल द्वारा आयोजित विशाल जागरण में भाजपा नेता दिनेश कौशिक, चेयरपर्सन सरोज राठी व भाजपा नेता डॉ. पंकज जैन समेत अन्य गणमान्य लोगों ने पूजा-अर्चना की। देर रात तक भक्त माता के भजनों पर झूमते रहे।

बता दें कि जयपुर की साक्षी अग्रवाल, दिल्ली के शीतल पांडे, हेमंत ठाकुर, रोहद धाम के धर्मेश दर्शन, बहादुरगढ़ के सुरेंद्र पंकज आदि गायकों ने माता के भजनों से माहौल को भक्ति रस से सराबोर कर दिया। जागरण में कथावाचक के रूप में महंत सुनील निर्मल उपस्थित रहे और मंच संचालन शंकर अनुरागी ने किया।

जागरण में पहुंचे डॉ. पंकज जैन समेत अन्य अतिथियों का मंडल सदस्यों ने पटका पहनाकर गर्मजोशी से स्वागत किया तथा स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मानित किया। माता रानी की पूजा-अर्चना करते हुए डॉ. पंकज जैन ने सभी लोगों की सुख, शांति व समृद्धि की कामना की।

उन्होंने मंडल को सफल आयोजन के लिए बधाई देते हुए कहा कि ऐसे धार्मिक कार्यक्रम समाज में सद्भावना, आस्था और सकारात्मक ऊर्जा का संचार करते हैं। उन्होंने कहा कि धर्म हमें सदैव सत्य, सेवा और सदाचार के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है।

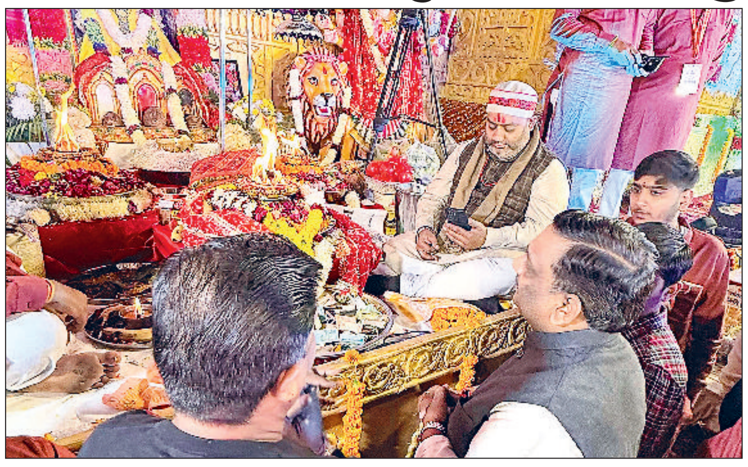

बहादुरगढ़। माता के दरबार में हाजिरी लगाते भाजपा नेता डॉ. पंकज जैन। फोटो: हरिभूमि

झज्जर। नशे के दुष्प्रभाव के प्रति जागरूक करते हुए पुलिस टीम। फोटो: हरिभूमि

आमजन को किया जा रहा नशे के दुष्प्रभाव के प्रति जागरूक

झज्जर। शनिवार को कस्बा बेरी के वार्ड नंबर सात में पुलिस की एक टीम द्वारा डोर टू डोर अभियान चलाकर ग्रामीणों को नशे के दुष्प्रभाव के प्रति जागरूक किया। उप निरीक्षक सुनील कुमार ने बताया कि नशे की लत किस प्रकार व्यक्ति के स्वास्थ्य, परिवारिक जीवन और सामाजिक सम्मान को प्रभावित करती है। उन्होंने समझाया कि नशा न केवल शारीरिक बीमारियों को जन्म देता है, बल्कि मानसिक तनाव, आर्थिक बोझ और परिवारिक कलह का भी प्रमुख कारण बनता है। अभियान के दौरान पुलिस टीम ने नशा रहित जीवन जीने के अनेक लाभ भी बताए जैसे बेहतर स्वास्थ्य, खुशहाल परिवार, आर्थिक बचत और समाज में सम्मानजनक जीवन। उन्होंने बताया कि इस पहल का उद्देश्य स्वस्थ, सुरक्षित और जागरूक वातावरण बनाना है, ताकि युवाओं और परिवारों को नशे के दुष्परिणामों से बचाया जा सके।

बिजली निगम के फोरमैन ने साबी नदी में कूदकर दी जान

रेवाड़ी। शुक्रवार रात्रि बिजली निगम में कार्यरत फोरमैन ने एनएच-48 स्थित साबी नदी मे कूदकर आत्महत्या कर ली। धारूहेड़ा थाना पुलिस ने कर्मचारी के शव को साबी नदी ने निकालने के बाद नागरिक अस्पताल के शवगृह में रखवाया है। पुलिस को 28 नवंबर शुक्रवार की रात को सूचना मिली की साबी नदी के पुल पर एक मोटरसाइकिल खड़ी हुई है, जिसके पास जूते व एक पर्स पड़ा हुआ है। सूचना पर धारूहेड़ा पुलिस मौके पर पहुंची और आसपास तलाश की तो साबी नदी में व्यक्ति का शव मिला। मृतक की पहचान गांव डूंगरवास निवासी 52 वर्षीय हंसराज के रूप में हुई। मृतक बिजली निगम में फोरमैन के पद पर कार्यरत था।

संवैधानिक मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता दोहराई

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

शनिवार को राजकीय कॉलेज बहादुरगढ़ में संविधान दिवस के उपलक्ष्य में कार्यक्रम हुआ। प्राचार्य दलबीर सिंह की अध्यक्षता में हुए कार्यक्रम में विद्यार्थियों को संविधान के महत्व, नागरिक कर्तव्यों तथा लोकतांत्रिक मूल्यों से अवगत करवाया गया।

उन्होंने कहा कि संविधान हमें अधिकारों के साथ-साथ जिम्मेदारियां निभाने की प्रेरणा देता है। एनएसएस कार्यक्रम अधिकारी जोगेंद्र सिंह ने संविधान की प्रस्तावना का सामूहिक वाचन करवाया। उपप्राचार्य सुमन हुड्डा, एनसीसी प्रभारी प्रो. मनोज कुमार, प्रो. अरुण कुमार तथा प्रो. भूपेंद्र की उपस्थिति में एनसीसी कैडेट्स ने न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व जैसे संवैधानिक मूल्यों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराई।

बहादुरगढ़। संविधान की रक्षा की शपथ लेते प्रिंसिपल, स्टॉफ व छात्र। फोटो: हरिभूमि

झज्जर। बाबा प्रसाद गिरी महाराज मंदिर में आयोजित महाआरती में शामिल श्रद्धालु।

महाआरती के साथ गीता महोत्सव के प्रथम दिवस का भव्य समापन

झज्जर। जिला स्तरीय गीता महोत्सव के पहले दिन का समापन शनिवार शाम नगर खेड़ा बाबा प्रसाद गिरी महाराज मंदिर में हुई भव्य और अलौकिक गीता आरती के साथ हुआ। भक्तिमय वातावरण ने पूरे परिसर को आध्यात्मिक आभा से भर दिया। महंत परमानंद गिरी और महंत मृत्युंजय गिरी सहित साधु संतों द्वारा पारंपरिक विधि-विधान के साथ महाआरती का शुभारंभ किया गया। जैसे ही शंखनाद और घंटियों की ध्वनि पूरे मंदिर में गूंजी, श्रद्धालु भाव-विभोर हो उठे। चारों ओर दीपों की कतारें जगमगा रही थीं और वातावरण गीता के दिव्य संदेश से ओत-प्रोत दिखाई दिया। मंदिर प्रांगण में काफी संख्या में श्रद्धालु शामिल हुए। सभी ने हाथ जोड़कर गीता के उपदेशों को आत्मसात करने का संकल्प लिया।

नि:शुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर का चार सौ लोगों ने उठाया लाभ

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

क्षेत्र के गांव कबलाना स्थित श्री श्री 1008 सिद्ध बाबा पालनाथ जी के पवित्र धूने पर आयोजित मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा समारोह एवं आठ मान के भव्य भंडारे के अवसर पर धार्मिक और सामाजिक माहौल के बीच महाराजा अग्रसेन सत नारायण गुप्ता हॉस्पिटल नूना माजरा बहादुरगढ़ द्वारा एक निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर लगाया गया। जिसका उद्देश्य ग्रामीण जनता को गुणवत्तापूर्ण और सुलभ स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराना है। शिविर में करीब चार सौ लोगों ने अपने स्वास्थ्य की जांच करवाई। शिविर में बीपी, शुगर, आंखों से संबंधी समस्याएं, जोड़ एवं हड्डियों का दर्द, त्वचा संबंधी रोग आदि का परीक्षण किया गया। अस्पताल की विशेषज्ञ डॉक्टरों और प्रशिक्षित टीम द्वारा प्रत्येक मरीज को उनकी रिपोर्ट के अनुसार उचित परामर्श प्रदान किया गया। इस दौरान मरीजों को निशुल्क दवाईयां भी वितरित की गई।

झज्जर। शिविर में स्वास्थ्य जांच करवाते हुए लोग। फोटो: हरिभूमि

खबर संक्षेप

झज्जर। नुक्कड़ नाटक के माध्यम से ग्रामीण को जागरूक करते हुए टीम सदस्य। फोटो : हरिभूमि

ग्रामीणों को किया उच्च शिक्षा के प्रति जागरूक

झज्जर। क्षेत्र के गांव गुढ़ा और खातीवास में ब्रेकथ्रू संस्था द्वारा बड़ी सी आशा अभियान के तहत नुक्कड़ नाटक का आयोजन किया गया। जिसमें ग्रामीणों को उच्च शिक्षा के प्रति जागरूक किया गया। आंगनवाड़ी कार्यकर्ता नीलम ने ब्रेकथ्रू संस्था टीम और नाटक टीम का स्वागत किया। नाटक के दौरान प्रीति ने कहा कि आर्थिक स्थिति का कमजोर होना और संसाधनों का अभाव होना भी एक अहम भूमिका निभाती हैं। प्राची ने कहा कि नाटक बहुत ही अच्छा लगा। इसमें सबसे अच्छी बात यह लगी कि लड़कियों की समस्याओं और सपनों की बात की गई। इस दौरान ममता मीणा सहित अन्य भी मौजूद रहे।

सैकड़ों की संख्या में महिलाओं ने लिया कलश यात्रा में भाग

दो दिवसीय मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा समारोह का भव्य आगाज, उमड़ा आस्था का सैलाब

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

क्षेत्र के गांव कबलाना स्थित श्रीश्री 1008 सिद्ध बाबा पालनाथ जी का धूना स्थल पर दो दिवसीय मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा समारोह का भव्य आगाज हुआ। मंदिर परिसर में आस्था का सैलाब उमड़ा। हजारों की संख्या में श्रद्धालुओं ने मंदिर परिसर में माथा टेक अपने परिवार की सुख समृद्धि की कामना की। इस दौरान निकाली गई कलश यात्रा में भी सैकड़ों की संख्या में महिलाओं ने भाग लिया और मूर्तियों की पूरे गांव में परिक्रमा करवाई गई। बच्चे, युवा, बुजर्ग सभी भक्ति के रंग में रंगे दिखाई दिए। ढोल नगाड़ों की थाप पर और भजनों पर जमकर नृत्य भी किया। महंत कुलदीप नाथ व वैद्यनाथ महाराज ने बताया कि कपूरी की पहाड़ी से बारहा के महंत कृष्णनाथ द्वारा यह आयोजन किया जा रहा है। समारोह में बाबा गोरखनाथ धाम के पीठाधीश्वर एवं यूपी के मुख्यमंत्री महंत आदित्य नाथ योगी व सीएम नायब सिंह सैनी को जहां मुख्यातिथि के रूप में आमंत्रित किया गया है विधायक महंत बाबा बालकनाथ योगी समारोह की अध्यक्षता करेंगे। देशभर के आश्रमों व मंदिरों के महंत एवं साधु संत समारोह में शामिल होंगे। उन्होंने बताया कि धूना स्थल पर श्री 1008 सिद्ध बाबा पालनाथ जी महाराज कपूरी की पहाड़ी, योगी तपस्वी बाबा मक्खन नाथ जी महाराज, सिद्ध बाबा सोमनाथ जी महाराज, श्री सिद्ध बाबा ज्योतिनाथ जी महाराज की प्रतिमाओं की प्राण प्रतिष्ठा कराई गई। उधर, भंडारे में हजारों की संख्या में श्रद्धालुओं ने प्रसाद ग्रहण किया।

झज्जर। कलश यात्रा के उपरांत मंदिर परिसर में पहुंचती हुई महिलाएं।

गांव की परिक्रमा के बाद मंदिर परिसर लौटते हुए ट्रैक्टर ट्राली में सवार श्रद्धालु।

झज्जर। मंदिर परिसर में साधु संतों के साथ बैठे हुए श्रद्धालु। फोटो : हरिभूमि

छात्रों को रोबोटिक्स और ड्रोन टेक्नोलॉजी की दी जानकारी

झज्जर। विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए विषय विशेषज्ञ।

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

संस्कारम इंटरनेशनल स्कूल में आधुनिक तकनीक को बढ़ावा देने के उद्देश्य से एक विशेष रोबोटिक्स एवं ड्रोन टेक्नोलॉजी कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यक्रम में संस्कारम ग्रुप के चेयरमैन डॉक्टर महिपाल और प्राचार्या श्वेता कौशिक ने बतौर मुख्यातिथि शिरकत की। चेयरमैन डॉक्टर महिपाल ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि भविष्य टेक्नोलॉजी आधारित शिक्षा का है और ऐसे कार्यक्रम विद्यार्थियों की वैज्ञानिक सोच को विकसित करते हैं। रोबोटिक्स लैब और मशीनों का प्रदर्शन स्कूल की उन्नत रोबोटिक्स लैब में विको रोबोटिक मशीनों का वास्तविक प्रदर्शन,उनके पार्टस व संरचना, सेंसर और मोटर की कार्यप्रणाली के बारे में विस्तारपूर्वक बताया गया। तीसरी से पांचवीं कक्षा के विद्यार्थियों को थ्री इन वन रोबोट का प्रशिक्षण, छोटे विद्यार्थियों के लिए थ्री इन वन रोबोट की विशेष प्रस्तुति रखी गई। जिसमें विद्यार्थियों ने सीखा कि एक ही मॉडल को तीन अलग-अलग रूपों में कैसे बदला जा सकता है। विद्यार्थियों ने रोबोट के पार्ट्स जोड़कर उनकी कार्यप्रणाली को समझा। वहीं छठी से दसवीं कक्षा तक के विद्यार्थियों को ड्रोन टेक्नोलॉजी और एआई, विद्यार्थियों के लिए उन्नत ड्रोन टेक्नोलॉजी का सत्र आयोजित किया गया। जिसमें ड्रोन के पार्ट्स, उड़ान तकनीक, बैलेंसिंग सिस्टम, सुरक्षा नियम जैसे विषयों पर विस्तार से चर्चा की गई। साथ ही आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का परिचय भी दिया गया।

एल ए स्कूल के विद्यार्थियों ने किया गीता पुरम का भ्रमण

झज्जर। कार्यक्रम के दौरान उपस्थित विद्यार्थी एवं स्कूल स्टॉफ सदस्य। फोटो : हरिभूमि

झज्जर। एल ए वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के एनएसएस वॉलिंटियर ने गीता महोत्सव ने भाग लिया। स्कूल संचालक जगपाल गुलिया, जयदेव दहिया, अनीता गुलिया, नीलम दहिया, प्राचार्या निधि कादियान ने विद्यार्थियों के साथ गीता पुरम का भ्रमण किया। नौवीं कक्षा के बच्चों ने ट्रैफिक पुलिस के इंचार्ज सतीश व सत्यप्रकाश कि मौजूदगी में एक प्रतियोगिता में भाग लिया। इस प्रतियोगिता के आधार पर बच्चों को अप्रिशिएसन सर्टिफिकेट प्रदान किया। कार्यक्रम की रूपरेखा बनाने के लिए मुकेश शर्मा, पूजा कादियान, अमित लोहचब व विशाल कुमार को स्कूल प्रबंधक के एम डागर ने सम्मानित किया। इस अवसर पर रविंद्र लोहचब, पिंकी अहलावत, पुष्पा यादव ने विद्यार्थियों को गीता जैसे पावन ग्रंथ के सिद्धांतों को अपनाने के लिए प्रेरित किया।

हिंदी कहानी वाचन प्रतियोगिता में रश्मि ने सुनाई शिक्षाप्रद कहानी

- सभी प्रतिभागियों ने मनोरंजक और शिक्षाप्रद कहानियां सुनाकर पूरी दर्शकदीर्घा को मंत्रमुग्ध किया

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

एच डी साल्हावास में शनिवार को हिंदी कहानी वाचन प्रतियोगिता आयोजित की गई। जिसमें छठी कक्षा के 65 विद्यार्थियों ने अपनी प्रस्तुति दी। प्राचार्य सतबीर सिंह और मिडल हेड अनिता यादव की अध्यक्षता में आयोजित इस प्रतियोगिता में हिंदी अध्यापिका सुनीता जाखड़ और बीना शर्मा ने निर्णायक की भूमिका निभाई। आज की हिंदी कहानी वाचन प्रतियोगिता में रश्मि ने प्रथम, जबकि भौमिक ने द्वितीय और वंशिका ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। महक को सांत्वना पुरस्कार मिला। सभी प्रतिभागियों ने मनोरंजक और शिक्षाप्रद कहानियां सुनाकर पूरी दर्शकदीर्घा को मंत्रमुग्ध किया। इस दौरान अपने संबोधन में एच डी ग्रुप सचिव विशाल नेहरा ने बताया कि कहानी शैली से हम किसी भी मुश्किल विषय को आसानी से समझ सकते हैं। यह शैली छोटे बच्चे से लेकर बड़े व्यक्ति को भी सहजता से समझ में आ जाती है। इसमें पात्र, संवाद, वातावरण, देशकाल, शिक्षा सभी का होना आवश्यक है। इसके साथ-साथ कहानीकार के हाव-भाव कहानी के अनुरूप होने चाहिए। अच्छी कहानी हमेशा पाठक की जिज्ञासा को बनाए रखती है। प्रत्येक कहानी हमें कोई न कोई शिक्षा अवश्य देती है। वहीं एच डी ग्रुप सचिव हेमंत गुलिया ने विद्यार्थियों को एक रोचक और शिक्षाप्रद कहानी सुनाकर सभी का मन मोह लिया। उन्होंने सारगर्भित कहानी प्रस्तुत कर प्रतियोगिता को और भी मनोरंजक बना दिया। प्रतियोगिता के समापन पर विजेता विद्यार्थियों को आकर्षक इनाम देकर सम्मानित किया गया।

झज्जर। स्कूल स्टॉफ सदस्यों के साथ होनहार विद्यार्थी। फोटो : हरिभूमि

वैदिक स्कूल के विद्यार्थियों ने टैलेंट शो प्रतियोगिता में दी शानदार प्रस्तुति

- विजेता प्रतिभागियों को ट्रॉफी तथा मेडल देकर सम्मानित किया

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

किड्ज शैशव, किड्ज मोंटेसरी विंग व वैदिक गर्ल्स सीनियर सैकेंडरी स्कूल में शनिवार को रचनात्मक ,कल्पनाशीलता और आत्मविश्वास को बढ़ावा देने के उद्देश्य से शानदार प्रतिभा प्रदर्शन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में प्ले ग्रुप से लेकर यूकेजी तक के विद्यार्थियों को अपने पसंदीदा चरित्र और विषय पर फैंसी ड्रेस पहन कर आने का अवसर मिला। बच्चों ने रोबोट, किसान, अभिवक्ता ,डॉक्टर, ट्रैफिक पुलिस , अध्यापिका, आइसक्रीम, इंद्रधनुष, कृष्ण-राधा ,जवाहरलाल नेहरू ,भगत सिंह ,मैगी, आम, मोर, परी, वकील और स्मार्टफोन आदि के रूप में अपनी प्रस्तुति देकर सभी का मन मोह लिया। बच्चों ने स्मार्टफोन के दुरुपयोग पर एक छोटा नाटक प्रस्तुत कर माता-पिता को बच्चों के साथ समय बिताने का संदेश दिया। कार्यक्रम का समापन हरियाणा की लोक संस्कृति पर आधारित आकर्षक डांस प्रस्तुति से हुआ। विजेता प्रतिभागियों को ट्रॉफी तथा मेडल देकर सम्मानित किया। विद्यालय की डायरेक्टर उषा गहलोत ने छात्रों के प्रदर्शन की सराहना की।

झज्जर। कार्यक्रम के दौरान होनहार प्रतिभागी स्कूल स्टॉफ सदस्यों के साथ। फोटो : हरिभूमि

खेल को खेल की भावना से खेलने की शपथ दिलाई

झज्जर। विजेता प्रतिभागियों को सम्मानित करते हुए स्कूल स्टॉफ सदस्य। फोटो : हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

आदर्श वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय दादनपुर में आयोजित दो दिवसीय वार्षिक खेलकूद अंतरसदनीय प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ शानदार और अनुशासित मार्च पास्ट के साथ हुआ। इसके पश्चात विद्यालय के कप्तान द्वारा खेल ध्वज फहराया गया और परंपरागत खेल मशाल को प्रज्वलित किया गया व खेल को खेल की भावना से खेलने की शपथ दिलाई। विद्यालय में कक्षा-वार विभिन्न स्पर्धाओं का आयोजन किया गया। विद्यार्थियों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। विद्यालय के निदेशक अमित गहलावत ने कहा कि खेल पढ़ाई का पूरक हैं। खेलों से बच्चों में संतुलन, फुर्ती और आत्मानुशासन के गुण विकसित होते हैं। प्रतियोगिता के समापन पर विजेता प्रतिभागियों को पदक व प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया।

विभिन्न प्रतियोगिताओं में विद्यार्थियों ने दिखाई प्रतिभा

झज्जर। तक्षशिला विद्यापीठ परिसर में प्राथमिक वार्षिक खेल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें नर्सरी से पांचवी कक्षा तक के विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। कार्यक्रम का शुभारंभ मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलन कर किया गया। सभी सदनों के विद्यार्थियों ने जुंबा नृत्य द्वारा कार्यक्रम में समा बांधा। इस दौरान पचास मीटर, सत्तर मीटर और सौ मीटर दौड़ का आयोजन किया गया। इसके साथ ही बॉल कप रेस, लेमन स्पून रेस, थ्री लेग रेस, लड्डू और जलेबी रेस, मार्बल रेस, बैग पैक रेस आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता का शुभारंभ एनसीसी कैडेट्स की परेड के साथ की गई और ध्वजारोहण के साथ सभी विद्यार्थियों ने खेल को खेल की भावना से खेलने की शपथ ली। सभी विजेता प्रतिभागियों को मेडल और ट्रॉफी देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के अंत में चेयरमैन सुखबीर सिंह डबास, निदेशक हरबीर सिंह डबास, प्राचार्य नसीब सिंह अहलावत ने विद्यार्थियों को शिक्षा के साथ-साथ खेलों में भी आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित किया।

झज्जर। प्रतियोगिता में भाग लेते हुए नन्हें विद्यार्थी। फोटो : हरिभूमि

छात्रों को किया एचआईवी एडस के प्रति जागरूक

झज्जर। कार्यक्रम के दौरान टीच एड्स मूवी देखते हुए विद्यार्थी एवं स्टॉफ सदस्य।

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

राजकीय महाविद्यालय दुजाना में कार्यवाहक प्राचार्या डॉक्टर रजनी की अध्यक्षता में रेड रिबन क्लब द्वारा विश्व एड्स दिवस मनाया गया। रेड रिबन क्लब संयोजिका डॉक्टर सिल्की जैन ने विद्यार्थियों को बताया कि यह एक विश्व व्यापी स्वास्थ्य सेवा दिवस है जो 33 वर्षों से प्रतिवर्ष एक दिसंबर को मनाया जाता है ताकि एचआईवी एड्स के बारे में लोगों को जागरूक किया जा सके और उसके प्रसार को रोका जा सके। यह दिवस एचआईवी एड्स संक्रमण रोकने, उपचार करने और देखभाल के प्रयासों का समर्थन करने का वैश्विक अवसर है। उन्होंने कहा कि एचआईवी वायरस शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली को कमजोर कर गंभीर बीमारी पैदा कर देता है। यह एक संक्रामक एवं जानलेवा बीमारी है जिससे निपटने का एकमात्र उपाय रोकथाम और जागरूकता है। विद्यार्थियों को एचआईवी के बारे में जागरूक करने के लिए टीच एड्स मूवी दिखाई गई और उन्हें इस बारे में जागरूक किया गया।

योगी आदित्यनाथ के आगमन के चलते ड्रोन उड़ाने पर प्रतिबंध

झज्जर। रविवार को उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के गांव कबलाना स्थित बाबा पालनाथ धाम में प्रस्तावित आगमन को लेकर सुरक्षा व्यवस्था को मद्देनजर रखते हुए जिलाधीश ने आयोजन स्थल व आसपास के क्षेत्र में ड्रोन उड़ाने पर पाबंदी लगा दी गई है। भारतीय सुरक्षा संहिता की धारा 163 के तहत निहित शक्तियों का प्रयोग करते हुए यह आदेश जारी किए हैं। यह पाबंदी हेलीपैड, आयोजन स्थल व आस-पास के 500 मीटर के दायरे में लागू रहेगी। मुख्यमंत्री के दौरे के चलते रविवार को आयोजन स्थल व आसपास क्षेत्र में ड्रोन के प्रयोग पर प्रतिबंध लगाया गया है। यह आदेश मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश के आगमन से चार घंटे पहले और एक घंटा बाद तक जारी रहेंगे। अगर कोई व्यक्ति उपरोक्त आदेशों के उल्लंघन में दोषी पाया जाता है तो उसके खिलाफ भारतीय न्याय संहिता की धारा 223 के प्रावधान के तहत मुकदमा दर्ज किया जाएगा।

सार्वजनिक सूचना

न्यायालय सहायक कलैक्टर, प्रथम श्रेणी, बादली

केस नं०555/एन०टी० तिथि दावरा 24/04/2025 तिथि पेशी 04/12/25 मौजा बामड़ौला तह० बादली जिला झज्जर

मॉडल इकोनोमिक टाऊनशिप लिमिटेड हाल आबाद प्लॉट नं0 77-बी, तृतीय तल, सैक्टर-18, इफको मार्ग, गुरूग्राम-122015 (हरियाणा)। मार्फत अधिकृत प्रतिनिधि रविन्द्र कुमार शर्मा पुत्र श्री धूपसिंह।

......प्राथी

बनाम

1. अजीत 2. कृष्ण पुत्रान राम सिंह पुत्र रामकलाँ, 3. गुलाब सिंह पुत्र अमर सिंह पुत्र रामकलाँ, 4. राजबाला विधवा रामबीर सिंह पुत्र लखीराम, 5. विवेक चौधरी पुत्र रामचन्दर उर्फ रामफल पुत्र रामकलाँ, निवासीगण गाँव बामडौला, तहसील बादली व जिला झज्जर। उपरोक्त सभी निवासीयान व बिस्वेदारान गांव बामड़ौला, तहसील बादली जिला झज्जर।

.......उत्तरवादीगण

दरखास्त तकसीम बाबत भूमि खेवट नं0 532/393, मौजा बामडौला, जमाबन्दी साल 2019-2020, तहसील बादली जिला झज्जर।

सर्व साधारण को इस विज्ञापन के माध्यम से सूचित किया जाता है कि मॉडल इकोनोमिक टाऊनशिप लिमिटेड गुरूग्राम बनाम अजीत आदि निवासीगण गांव बामडौला, तहसील बादली, जिला झज्जर आधीन राजस्व अधिनियम मौजा बामड़ौला, दरखास्त तकसीम बाबत भूमि के लिए इस न्यायालय में विचाराधीन है। इस विज्ञापन प्रकाशन के माध्यम से उत्तरवादीगण व उनके कानूनी वारसान की तलबी की जाती है और उत्तरवादीगण व उनके कानूनी वारसान को हिदायत दी जाती है कि वह निश्चित तिथि 04/12/2025 को निम्न हस्ताक्षरी के न्यायालय में उपस्थित होकर अपना जवाब/उजर के लिए असालतन/ वकालतान पेश होवें अन्यथा आपके विरूद्ध यकतरफा कार्यवाही अमल में लाई जायेगी। यह समन/विज्ञापन आज दिनांक 30/10/202.5 को मेरे हस्ताक्षर व न्यायालय की मोहर लगाकर जारी किया गया है।

हस्ता/-सहायक कलेक्टर प्रथम श्रेणी, बादली

प्रतियोगिता में सभी सदनों से पांच-पांच प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया

सामाजिक विज्ञान प्रश्नोत्तरी में विद्यार्थियों ने दिखाई प्रतिभा

- कार्यक्रम का शुभारंभ प्राचार्या नेहा शर्मा ने स्टॉफ सदस्यों के साथ मां सरस्वती के समक्ष पुष्प अर्पित कर किया

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

एम आर स्कूल हसनपुर में विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के उद्देश्य से समय-समय पर विभिन्न विषयों पर आधारित प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है। इसी क्रम में कक्षा चौथी से सातवीं तथा कक्षा आठवीं से बारहवीं तक के विद्यार्थियों के बीच अंतर सदनीय सामाजिक विज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ प्राचार्या नेहा शर्मा ने स्टॉफ सदस्यों के साथ मां सरस्वती के समक्ष पुष्प अर्पित कर किया। प्रतियोगिता में सभी सदनों से पांच-पांच प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। चार चरणों में आयोजित इस क्विज प्रतियोगिता के दौरान विद्यार्थियों ने अपनी अद्भुत प्रतिभा और त्वरित बुद्धि का प्रदर्शन किया। दर्शकों ने भी बढ़-चढ़कर प्रश्नों के उत्तर दिए और जोरदार तालियों से प्रतिभागियों का उत्साहवर्धन किया। निर्णायक मंडल ने निर्धारित मानकों के आधार पर परिणाम घोषित किए। जिसमें जूनियर वर्ग से अग्नि सदन के प्रतिभागी गर्व, आदित्या, दीक्षा, जिया और श्रृष्टि ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

वहीं सीनियर वर्ग में समीर सदन के प्रतिभागी प्रिंस, स्नेहा, कृष, जय डागर और साक्षी विजयी रहे। समापन समारोह में प्राचार्या नेहा शर्मा ने सभी विजेताओं, प्रतिभागियों एवं सदन प्रमुखों को बधाई देते हुए कहा कि ऐसे आयोजनों से विद्यार्थियों में न केवल बौद्धिक विकास होता है, बल्कि आत्मविश्वास भी बढ़ता है।

झज्जर। विद्यालय स्टॉफ सदस्यों के साथ होनहार प्रतिभागी। फोटो : हरिभूमि

ज्वेलरी शॉप में चोरी की वारदात के बाद विधायक ने सीएम से लगाई थी सुरक्षा व्यवस्था मजबूत करने की गुहार

9 साल बाद 12 करोड़ में इंस्टॉल होगा सिटी सर्विलांस सिस्टम

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

शहर में सिटी सर्विलांस सिस्टम लगाने की लंबे समय से लंबित योजना अब जमीन पर उतरने जा रही है। वर्ष 2016 में तत्कालीन मुख्यमंत्री मनोहर लाल द्वारा बहादुरगढ़ में आधुनिक सिटी सर्विलांस सिस्टम स्थापित करने की घोषणा की गई थी। लेकिन, सरकारी मंजूरी और बजट स्वीकृति की प्रक्रिया लंबी खिंच जाने के कारण यह परियोजना वर्षों तक फाइलों में दबी रह गई। इस बीच शहर में कई बार सुरक्षा संबंधी चुनौतियां सामने आईं। अब विधायक राजेश जून के प्रयासों से करीब 12 करोड़ रुपए का यह प्रोजेक्ट मंजूर हो गया है।

बता दें कि तत्कालीन सीएम मनोहर लाल ने 18 अप्रैल 2016 को बहादुरगढ़ में सिटी सर्विलांस सिस्टम इंस्टाल करवाने की घोषणा की थी। घोषणा के बाद विस्तृत परियोजना रिपोर्ट (डीपीआर) तैयार की गई, जिसमें शहर के 35 महत्वपूर्ण स्थलों को चिन्हित किया गया था, जहां सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए सीसीटीवी कैमरे स्थापित किए जाने आवश्यक थे। लेकिन यह प्रोजेक्ट बीते 9 सालों से ठंडे बस्ते में ही रहा। इस बीच पुलिस उपायुक्त मयंक मिश्रा की पहल पर बहादुरगढ़ चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज के सहयोग से बहादुरगढ़ के मुख्य चौराहों पर सीसीटीवी कैमरे इंस्टॉल किए गए। इससे मुख्य बाजार और प्रमुख मार्गों की निगरानी शुरू हुई, लेकिन संपूर्ण सिटी सर्विलांस सिस्टम अभी भी लागू नहीं हो पाया था। इसी दौरान शहर की एक ज्वेलरी शॉप में बड़ी चोरी की वारदात हो गई, जिसने शहर की सुरक्षा पर बड़े सवाल खड़े कर दिए।

चोरी की घटना के बाद बहादुरगढ़ के विधायक राजेश जून ने तत्काल मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी से मुलाकात कर शहर की सुरक्षा व्यवस्था को मजबूत बनाने की मांग रखी। विधायक की मांग पर मुख्यमंत्री ने तुरंत कार्रवाई करते हुए सिटी सर्विलांस सिस्टम को प्राथमिकता सूची में शामिल किया और इसके शीघ्र इंस्टॉलेशन के निर्देश जारी कर दिए। मुख्यमंत्री के आदेशों के बाद नगर परिषद बहादुरगढ़ ने पुराने प्रस्तावों की फाइलिंग को दोबारा सक्रिय किया। डीपीआर के आधार पर परियोजना की कुल लागत लगभग 11 करोड़ 99 लाख रुपये अनुमानित की गई। इसके साथ ही सरकार की ओर से तुरंत परियोजना को मंजूरी मिली। नगर परिषद की फाइनेंस एंड कॉन्ट्रैक्ट कमेटी ने 26 नवंबर को इस प्रस्ताव को स्वीकृति दे दी। उसी दिन डीएमसी के माध्यम से प्रस्ताव निकाय विभाग को भेज दिया गया। इसके साथ ही वर्षों से अटकी यह योजना अब साकार लेने जा रही है।

बहादुरगढ़। शहर के चौराहों पर बीसीसीआई की मदद से लगाए गए सीसीटीवी कैमरे। फोटो : हरिभूमि

आधुनिक निगरानी प्रणाली से लैस होने की दिशा में बड़ा कदम

विधायक राजेश जून ने मुख्यमंत्री नायब सैनी का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यह परियोजना बहादुरगढ़ के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। बहादुरगढ़ शहर आधुनिक निगरानी प्रणाली से लैस होने की दिशा में बड़ा कदम बढ़ा चुका है। उन्होंने बताया कि सिटी सर्विलांस सिस्टम के पूर्ण रूप से इंस्टॉल होने के बाद हर के 35 प्रमुख स्थान हाई-रिजॉल्यूशन कैमरों की निगरानी में रहेंगे। ट्रैफिक मैनेजमेंट और क्राइम कंट्रोल में बड़ी मदद मिलेगी। पुलिस को घटनाओं का लाइव फीड व बैकअप डेटा प्राप्त होगा। अपराधों की जांच में तेजी आएगी और निवारण की क्षमता बढ़ेगी। यह सिस्टम इंस्टॉल होने के बाद चोरी, झपटमारी व अन्य अपराधों पर लगाम लगेगी।

जिलास्तरीय गीता महोत्सव का भव्य आगाज

मंत्रोच्चार, नगाड़े व गीता आधारित लोक गीतों से गूंजा गीतापुरम

महोत्सव स्थल को गीता के श्लोकों, थीम आधारित कलात्मक सजावट और आध्यात्मिक माहौल ने एक अलौकिक रूप प्रदान किया

झज्जर। गीता महोत्सव में रोमांचक प्रस्तुति देते कलाकार व गीता महोत्सव में प्रस्तुति देते हुए प्रसिद्ध कलाकार विक्की काजला। फोटो : हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज ▶▶ झज्जर

भगवान श्रीकृष्ण के शाश्वत उपदेशों और श्रीमद्भगवद्गीता के दिव्य संदेश को जन-जन तक पहुंचाने की भावना के साथ जिला स्तरीय गीता महोत्सव का शनिवार को भव्य शुभारंभ हुआ। महर्षि दयानंद सरस्वती स्टेडियम में बनाए गए गीतापुरम पहले ही दिन अध्यात्म, भारतीय संस्कृति और लोक परंपरा के अद्भुत संगम देखने को मिला। महोत्सव स्थल को गीता के श्लोकों, थीम आधारित कलात्मक सजावट और आध्यात्मिक माहौल ने एक अलौकिक रूप प्रदान किया।

वहीं, विक्की काजला, जोगिंद्र कुंडू और लीला सैनी ने लोक-गीतों से समां बांधा। पहले दिन महोत्सव का शुभारंभ कार्यवाहक डीसी जगनिवास ने बतौर मुख्यातिथि किया, जबकि जिप चेयरमैन कप्तान सिंह बिरधाना विशिष्ट अतिथि के रूप में मंच पर उपस्थित रहे। सीजेएम विशाल और सीटीएम नमिता कुमारी भी उपस्थित रहे। मुख्यातिथि ने कहा कि गीता महोत्सव जैसे आयोजन वर्तमान को हमारी अध्यात्मिक जड़ों से जोड़ने का कार्य करते हैं।

गीता पूरे विश्व को रास्ता दिखाती है और भारतीय संस्कृति के लिए ये गर्व की बात है। जिप चेयरमैन कप्तान सिंह बिरधाना ने कहा कि गीता का ज्ञान जीवन की प्रत्येक परिस्थितियों में मार्गदर्शन करता है। इससे पूर्व पहले दिन का आरंभ पवित्र गीता हवन के साथ हुआ। गुरुकुल सिद्धपुर लोवा की कन्याओं द्वारा आयोजित हवन-कन्या कार्यक्रम ने सभी को परंपरा, संस्कार और अध्यात्म की अनुभूति कराई। यज्ञशाला के आसपास गीता के श्लोकों की मधुर ध्वनि पूरे वातावरण को पवित्रता से भर रही थी।

झज्जर। कार्यक्रम के दौरान हवन में आहुति डालते हुए मुख्यातिथि एवं अन्य प्रबुद्धजन।

प्रदर्शनी रही आकर्षण का केंद्र

हवन के उपरांत मुख्य अतिथि और विशिष्ट अतिथियों ने प्रदर्शनी और क्राफ्ट मेले का रिबन काटकर शुभारंभ किया व सभी स्टॉल का अवलोकन किया। प्रदर्शनी हर बार की तरफ विशेष आकर्षण का केंद्र है। लगभग 40 विभागीय और सामाजिक संस्थाओं द्वारा लगाए गए स्टॉलों में सरकारी योजनाओं की जानकारी, गीता के विविध प्रसंगों को दर्शाती कलाकृतियां, डिजिटल इंडिया, स्वदेशी, स्वास्थ्य, कृषि, शिक्षा और महिला सशक्तिकरण पर आधारित मॉडल, हस्तशिल्प, लोक कला और हस्त शिल्प ने दर्शकों का ध्यान खींचा।

विक्की काजला, जोगिंद्र कुंडू व लीला सैनी ने समां बांधा

विक्की काजला एंड पार्टी ने अपने लोकप्रिय गीतों व गीता आधारित प्रस्तुतियों से दर्शकों को झूमने पर मजबूर कर दिया। इसके बाद जोगिंद्र कुंडू, लीला सैनी और अन्य कलाकारों की गीता आधारित प्रस्तुतियों ने वातावरण को और जीवंत कर दिया। भक्ति और लोक संगीत से सजा यह संगीतमय सफर शाम तक चलता रहा। स्कूली विद्यार्थियों की भी गीता थीम पर अनेक सरहानीय प्रस्तुतियां दर्शकों को देखने को मिली।

कार व बाइक की टक्कर में युवक की मौत

झज्जर। शुक्रवार रात झज्जर रेवाड़ी मार्ग पर गांव सिलानी के नजदीक कार व बाइक की टक्कर में बाइक सवार युवक गंभीर रूप से घायल हो गया। जिसे उपचार के लिए स्थानीय नागरिक अस्पताल लाया गया। जहां उसकी गंभीर हालत को देखते हुए प्राथमिक उपचार के बाद पीजीआई रोहतक रैफर कर दिया गया। पीजीआई में शनिवार को उपचार के दौरान युवक की मौत हो गई। मृतक की पहचान सुरहेती गांव निवासी रोहित देशवाल के तौर पर की गई है। जानकारी अनुसार करीब 24 वर्षीय रोहित देशवाल दिल्ली एयरपोर्ट पर नौकरी करता था। शुक्रवार को वह अपनी ड्यूटी समाप्त कर वापिस अपने घर लौट रहा था। इसी दौरान बीच रास्ते गांव सिलानी के नजदीक कार ने उसकी बाइक को टक्कर मार दी। जिसके कारण लगी गंभीर चोटों के कारण उसके दम तोड़ दिया। मामले के जांच अधिकारी जिले सिंह ने बताया कि पोस्टमार्टम करवाने के बाद शव परिजनों को सौंप दिया गया है। आरोपी कार चालक के खिलाफ मामला दर्ज किया गया है। पुलिस द्वारा इस संबंध में नियमानुसार आगामी कार्रवाई अमल में लाई जा रही है।

बहादुरगढ़। खुशी राठी को सम्मानित करते भाजपा पदाधिकारी। फोटो : हरिभूमि

शूटिंग में परनाला की खुशी राठी ने जीते दो मेडल

बहादुरगढ़। गांव परनाला की उभरती शूटर खुशी राठी ने शूटिंग के क्षेत्र में एक बार फिर शानदार प्रदर्शन करते हुए क्षेत्र का नाम रोशन किया है। बीते दिनों भोपाल में आयोजित इंडिया ओपन शूटिंग चैंपियनशिप में खुशी ने दो मेडल जीते हैं। जीत के साथ खुशी ने राष्ट्रीय चैंपियनशिप के लिए क्वालीफाई भी कर लिया है। प्रतियोगिता में खुशी ने 25 मीटर स्पोर्ट्स पिस्टल में सिल्वर मेडल और 25 मीटर जूनियर वर्ग में ब्रॉन्ज मेडल जीतकर अपनी प्रतिभा का दमदार प्रदर्शन किया। खुशी के पिता रवींद्र राठी ने बताया कि उसने टॉप विनर शूटिंग एकेडमी में शूटिंग की तकनीकी बारीकियां सीखीं। खुशी इन दिनों चंडीगढ़ में रहकर आगामी बड़ी प्रतियोगिताओं की तैयारी कर रही हैं। उनका लक्ष्य अब दिसंबर में दिल्ली में होने वाली नेशनल शूटिंग चैंपियनशिप में शानदार प्रदर्शन करना है। राष्ट्रीय चैंपियनशिप में खुशी राठी 10 मीटर एयर पिस्टल, 25 मीटर स्पोर्ट्स पिस्टल और 50 मीटर फ्री पिस्टल में भाग्य आजमाएगी। भाजपा जिलाध्यक्ष विकास वाल्मीकि, भाजपा नेता दिनेश कौशिक, सरपंच प्रतिनिधि अशोक राठी सहित अन्य लोगों ने खुशी राठी का सम्मान कर उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

हरदयाल में हुआ खेलकूद व शैक्षणिक सम्मान समारोह

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

हरदयाल पब्लिक स्कूल में खेल-कूद पुरस्कार वितरण समारोह बड़े उत्साह और हर्षोल्लास के साथ आयोजित किया गया। बारहवीं के दीपराज को बेस्ट स्पोर्ट्सपर्सन अवार्ड जीतने पर 11 हजार रुपए और दूसरे स्थान पर रहे 11वीं के यश प्रताप को 51 सौ रुपए देकर सम्मानित किया गया। साथ ही पिछले वर्ष के शैक्षणिक परिणामों में श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले छात्रों का सम्मान किया गया।

स्कूल निदेशिका अनुराधा यादव, श्रुति यादव और प्रधानाचार्य अंशु यादव ने अभिभावकों के साथ दीप प्रज्वलन कर मां सरस्वती की आराधना की। कार्यक्रम में वर्ष भर आयोजित दौड़, कबड्डी, क्रिकेट, खो-खो, बैडमिंटन, रस्साकशी आदि विभिन्न खेल-कूद प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र एवं मेडल प्रदान किए गए। छात्रों ने अनुशासन, खेल भावना और टीमवर्क का बेहतरीन उदाहरण प्रस्तुत किया। विद्यालय प्रबंधन ने उनकी सराहना की। इसके साथ ही कक्षा-स्तर पर प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को भी मंच पर सर्टिफिकेट एवं ट्रॉफी देकर प्रोत्साहित किया गया। स्कूल निदेशिका ने कहा कि ऐसी गतिविधियां विद्यार्थियों को आत्मविश्वास देती हैं। उन्होंने विजेताओं को बधाई देते हुए अन्य विद्यार्थियों को भी परिश्रम और समर्पण के साथ आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया।

बहादुरगढ़। उत्कृष्ट प्रदर्शन पर प्रोत्साहित करती स्कूल निदेशिका व प्रिंसिपल। फोटो : हरिभूमि

अशोका इंटरनेशनल में हुई वार्षिक खेल प्रतियोगिता

बहादुरगढ़। अशोका इंटरनेशनल स्कूल में वार्षिक स्कूल खेल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें पहली से 12वीं कक्षा तक के सभी विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। विभिन्न स्पर्धाओं में विद्यार्थियों ने अपनी गति, संतुलन, फुर्ती और साहस का बेहतरीन प्रदर्शन किया। यजुर्वेद हाउस ने खो-खो में प्रथम स्थान प्राप्त किया। अथर्ववेद हाउस ने रस्सा कसी में दूसरा स्थान प्राप्त किया। ऋग्वेद हाउस ने वॉलीबॉल में दूसरा स्थान प्राप्त किया। प्री प्राइमरी में नींबू दौड़ में दूसरी कक्षा की प्रेक्षा ने पहला, सांची और यशिका ने दूसरा स्थान प्राप्त किया। संतुलित बाल गेम में तीसरी कक्षा के छात्रों ने शौर्य, रियान, और कुणाल ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। प्रधानाचार्य जैनेंद्र कुमार ने प्रमाण-पत्र देकर विजयी छात्रों को सम्मानित किया। उन्होंने कहा कि इन स्पर्धाओं ने छोटे बच्चों में मनोरंजन, आत्मविश्वास और खेलों के प्रति रुचि को बढ़ाया। विद्यार्थियों ने सक्रिय सहभागिता की। उनके अनुसार खेल जीवन का अभिन्न अंग है। यह अनुशासन, आत्मविश्वास, टीम भावना और स्वस्थ प्रतिस्पर्धा को विकसित करता है। स्कूल स्तर पर ऐसे कार्यक्रम बच्चों के भविष्य को मजबूत बनाते हैं। दो दिवसीय खेल प्रतियोगिता के दौरान विद्यार्थियों में जोश, उत्साह, खेल-भावना और टीमवर्क को बढ़ावा मिला।

झज्जर। निरीक्षण के दौरान उपस्थित महंत बाबा बालक नाथ, पुलिस आयुक्त डॉक्टर राजश्री सिंह एवं अन्य। फोटो : हरिभूमि

यूपी के सीएम योगी आज झज्जर में, पुलिस अलर्ट

हरिभूमि न्यूज ▶▶ झज्जर

उत्तर प्रदेश के सीएम योगी आदित्यनाथ रविवार को गांव कबलाना स्थित सिद्ध बाबा पालनाथ आश्रम में आयोजित मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा और आठमान भंडारा कार्यक्रम में शिरकत करेंगे।

कार्यक्रम की अध्यक्षता महंत बाबा बालक नाथ करेंगे। योगी आदित्यनाथ दोपहर 12 बजे कार्यक्रम में पहुंचेंगे और श्रद्धालुओं के साथ धार्मिक अनुष्ठान में भाग लेंगे। सीएम योगी आदित्य नाथ के दौरे को लेकर पुलिस प्रशासन अलर्ट है। पुलिस कमिश्नर डॉक्टर राजश्री सिंह ने कार्यक्रम स्थल का दौरा किया और सुरक्षा व्यवस्था का जायजा लेते हुए आवश्यक दिशा निर्देश दिए।

उन्होंने बताया कि यातायात व्यवस्था को सुचारू रखने के उद्देश्य से कई मार्गो को अस्थायी रूप से डायवर्ट किया जाएगा। उन्होंने बताया कि रविवार को झज्जर से बहादुरगढ़ आने-जाने वाले वाहन चालकों के लिए ट्रैफिक में अस्थाई बदलाव किया गया है। झज्जर में फ्लाईओवर के पास नाकाबंदी की गई और डाबौदा से झज्जर की ओर आने वाले वाहनों को भी रोक दिया गया है। डायवर्सन की यह व्यवस्था केवल कार्यक्रम समापन तक रहेगी।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
बहादुरगढ़ : सूरजमल वाली गली, गणपति ट्रैवलर्स के ऊपर, नजदीक टैक्सी स्टैंड, बहादुरगढ़
झज्जर :- पुराना बर्फ खाना रोड, शिव चौक, झज्जर
फोन : 8295738500, 8814999142, 8295157800, 9253681005

मृत्यु अंत नहीं है
मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती
मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है
आत्मा पथ प्रदर्शक है।
हरिभूमि
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।
तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश
आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन हरिभूमि के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5×8 सें.मी 10×8 सें.मी	स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर	रु. 2500/- रु. 3000/-

+5% GST Extra
नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज पर मान्य। अन्य किसी साईज के लिए कार्ड रेट लागू।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
झज्जर : हरिभूमि कार्यालय, पुराना बर्फ खाना रोड, शिव चौक, फोन : 8295876400
बहादुरगढ़ : सुरजमल वाली गली, रोहतक रोड, गणपति ट्रैवल्स के ऊपर, 8295852900

बहादुरगढ़। सेवानिवृत्ति पर हुए कार्यक्रम में मंचासीन मंजू रानी व अन्य। फोटो : हरिभूमि

अध्यापिका मंजू को दी यादगार विदाई

बहादुरगढ़। काठमंडी के राजकीय मिडल स्कूल की अध्यापिका मंजू रानी शनिवार को शिक्षा विभाग में 25 वर्ष की सेवा अवधि के बाद सेवानिवृत हो गई। स्कूल स्टॉफ और विद्यार्थियों में उन्हें यादगार विदाई दी गई। पीटीआई मंजू रानी ने सोनीपत के गांव जाखोली से अपनी सेवा आरंभ की। जसौर खेड़ी, कुलासी और कानोंदा स्कूल के बाद वे अब काठमंडी के राजकीय मिडल स्कूल से रिटायर हुई। मुख्याध्यापिका डॉ. पुष्पा, भाविप के जिला समन्वयक सतीश शर्मा, पार्षद राजेश तंवर, डॉ. विरेंद्र भारद्वाज, शिक्षाविद प्रवीण शर्मा, मुख्याध्यापक अशोक कुमार, प्राईमरी हैड रोशनलाल, अंजुला, सुशील, रेखा, ममता, रविंद्र, मीनू, स्वीटी आदि ने सेवानिवृति पर उन्हें बधाई दी।

प्रदूषण से नहीं मिल पा रही निजात

बहादुरगढ़। एनसीआर में प्रदूषण की समस्या से लोगों को निजात नहीं मिल पा रही। हालांकि ग्रेप की पाबंदियां लागू हैं, लेकिन इसके बावजूद वायु गुणवत्ता पूरी तरह से नहीं सुधर पा रही। बहादुरगढ़ इलाके में शनिवार को भी औसतन एक्यूआई 3 सौ के आसपास रहा। सड़क पर उड़ती धूल, फैक्ट्रियों और वाहनों से निकलता धुआं प्रदूषण की बड़ी वजह है। हालांकि प्रशासनिक स्तर पर प्रदूषण की रोकथाम के लिए प्रयास किए जा रहे हैं। प्रदूषण के कारण लोगों के स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ रहा है। पार्कों, स्टेडियम में सुबह शाम के वक्त टहलने वालों की संख्या में कमी आई है।

सफलता के लिए सकारात्मक दृष्टिकोण जरूरी

बहादुरगढ़। शनिवार को शहर की एचएल सिटी में आयोजित वर्कशॉप में बोर्ड परीक्षा में सफलता प्राप्त करने के टिप्स दिए गए। इसमें शिक्षाविद नीतू शौकीन ने कहा कि छात्र जीवन में सकारात्मक सोच और यथार्थवादी लक्ष्य सफलता के मूलमंत्र हैं। क्योंकि इन दोनों गुणों से परिपूर्ण व्यक्ति कठिन प्रतियोगिता के दौर में भी अपनी अलग पहचान बनाने में सक्षम होता है। शिक्षाविद नीतू शौकीन ने छात्रों को आने वाली बोर्ड परीक्षाओं में उल्लेखनीय प्रदर्शन करने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी ताकत का आभास और खुद में विश्वास होना चाहिए। क्योंकि आत्मविश्वास निष्ठा, समर्पण, लगन एवं स्वयं को भीड़ में अलग सिद्ध करने की मानसिकता ही उज्ज्वल भविष्य की नींव है। बच्चों को परीक्षा की बारीकियां समझातू हुए नीतू ने कहा कि किसी भी विषय में पूर्ण रूप से महारत हासिल करने के लिए किताबी एवं व्यवहारिक पहलू को गंभीरता से समझना चाहिए। विषय के किसी भी पहलू को छोड़ना नहीं चाहिए और समय प्रबंधन में शिक्षा, खेल एवं सांस्कृतिक गतिविधियों को भी महत्व देना चाहिए ताकि पूर्ण रूप से व्यक्तित्व का विकास हो पाए। क्योंकि नई पीढ़ी ने आगे चलकर भारत के नव-निर्माण में कुशल योगदान देना है।

झज्जर का पहला इंटरनेशनल एजुकेशन ब्रांड
PACE GROUP OF INSTITUTIONS
Contact us : 7419888021, 22, 23, 24, 25, 26, 27, 28, 20
WE ARE HIRING For Session-2026-27
Principal/Vice-Principal & Academic Coordinator — Minimum 5 years Exp. of CBSE (Each 2)
EXPERT — For All Subject(Physics, Chemistry, Biology Math) (NEET & IIT Level) CA & CLAT EXPERT Minimum 8 years Exp. of CBSE
PGT — For All Subject (English, Hindi, Math, S.S, Physics, Chemistry, Biology , Business Studies, Economics, Accounts, Physical Education, History, Political Science, Geography) Minimum 5 years Exp. of CBSE
TGT, PRT & NTT — For All Subject (English,Hindi, Math, Science, Social Science, Gk, Reasoning)
OTHER — Dance Teacher, Art & Craft, Music Teacher, D.P., English Spoken Teacher,Driver,Conductors,Security Guard,Peon
Interview Date : 14TH DECEMBER-2025
Timing: 09:00 am to 02:00 pm
Send Your Resume To: pacejjr@gmail.com
7419888021, 22, 23, 24, 25
VENUE: PACE IIT & MEDICAL JHAJJAR
Near Savera School, Arya Nagar, Jhajjar

सुदृढ़ संचार व्यवस्था हो या सामरिक सुरक्षा का मामला, कृषि उत्पादन में बढ़ोतरी की बात हो या प्राकृतिक आपदाओं का पूर्वानुमान लगाना हो, इन सबके लिए स्पेस टेक्नोलॉजी में नित नई ऊंचाई छूना जरूरी है। इस दिशा में इसरो निरंतर अग्रसर है। यही नहीं विश्व की स्पेस सुपर पावर बनने के लिए भी इसरो के पास कई इंपॉर्टेंट प्रोजेक्ट्स और प्लानिंग्स हैं। इन सभी पर एक विस्तृत नजर।

अंतरिक्ष में नई ऊंचाई छूने के लिए

निरंतर अग्रसर इसरो

कवर स्टोरी
संजय श्रीवास्तव

इसरो द्वारा तीन साल के भीतर अंतरिक्षयान निर्माण की तीन गुनी क्षमता का लक्ष्य निर्धारण, भारत की अंतरिक्ष महत्वाकांक्षा का पूर्वाभास है। यदि यह हासिल हो जाता है, तो भारतीय अंतरिक्ष एजेंसी भी न सिर्फ नासा और यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी के समानांतर खड़ी होगी बल्कि विश्व अंतरिक्ष बाजार में भी वह बहुत बड़ी खिलाड़ी बन जाएगी।

देश की प्रगति के लिए जरूरी: भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन, इसरो का अगले तीन वर्षों में अपने अंतरिक्षयान निर्माण क्षमता को तिगुना करने का फैसला, देश की बदलती सामरिक, वैज्ञानिक और आर्थिक प्राथमिकताओं के पूर्वाभास सरीखा है। इसरो चाहता है कि खुद को अंतरिक्ष के क्षेत्र में भविष्य की आवश्यकताओं के अनुरूप ढाल सके, ताकि वो निजी कंपनियों की तेज भागीदारी और अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष प्रतिस्पर्धा के बीच अविलंब आगे आ सके। उसकी यह पहल, देश को विश्व की अग्रणी अंतरिक्ष शक्तियों की श्रेणी में ऊपरी स्थान दिलाने की दिशा में एक रणनीतिक विस्तार है। अंतरिक्ष यान निर्माण क्षमता को बढ़ाना कई वजहों से जरूरी है। 5जी से बढ़कर 6जी की ओर बढ़ना है, तो सैकड़ों छोटे उपग्रहों को अंतरिक्ष में भेजना ही होगा। पृथ्वी अवलोकन और जलवायु निगरानी उपग्रहों की मांग भविष्य में बहुत ज्यादा बढ़ेगी।

वैश्विक शक्ति बनने की है सामर्थ्य: वैश्विक अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था में उपग्रहों और उनकी सेवाओं की मांग अभूतपूर्व तरीके से बढ़ रही है। संचार, अर्थ ऑब्जर्वेशन, रक्षा, निगरानी, नेविगेशन, आपदा प्रबंधन, कृषि और ऊर्जा क्षेत्रों में उपग्रहों की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण होने के चलते आने वाले दशक में हजारों नए उपग्रह लॉन्च होने की उम्मीद है।

भारत के पास सस्ता, तेज, कुशल और विश्वसनीय अंतरिक्ष अभियान संचालन की बेहतर क्षमता है, इसको पूरी दुनिया जान और मान रही है। तमाम देश इसके लिए भारत की ओर आकर्षित भी हैं। लेकिन अंतरिक्ष यान निर्माण-क्षमता के सीमित होने के कारण देश बेहतरीन कौशल होने के बावजूद इस तेजी से बढ़ती वैश्विक मांग का पूरा लाभ नहीं उठा पा रहा। इसरो अभी सालाना औसतन 6 से 7 अंतरिक्षयान बनाता है। तीन साल बाद क्षमता तीन गुना होने का मतलब है कि वह 18 से 21 अंतरिक्षयान प्रति वर्ष तैयार कर सकेगा। फिर उसके पास अन्य देशों के उपग्रहों के लांच के लिए न सिर्फ पर्याप्त यान होंगे बल्कि उन्हें लांच के लिए विंडो भी। कम समय अंतराल पर होने और निर्माण तथा लांच सुविधाएं सीमितता के चलते इसरो के कई प्रक्षेपण कार्यक्रम आपस में ओवरलैप करते हैं। इसरो द्वारा उत्पादन वृद्धि के साथ सैटेलाइट इंटीग्रेशन सेंटर्स की संख्या बढ़ाना इस ओवरलैप को कम करेगा। अंतरिक्षयानों की संख्या में वृद्धि भारत को वैश्विक प्रक्षेपण सेवाओं के बड़े बाजार में मजबूत प्रतिस्पर्धी बनाएगा, जहां आज

अमेरिका की स्पेस-एक्स जैसी निजी कंपनियां लगभग एकछत्र राज कर रही हैं।

संभावनाएं-क्षमताएं हैं भरपूर: आज भारत, वैश्विक अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था में केवल 2 प्रतिशत हिस्सेदारी रखता है, इसरो इसे 2030 तक 8 फीसद तक ले जाने के लक्ष्य पर काम कर रहा है। क्षमता विस्तार, निजी साझेदारी और नई तकनीकों का विकास इसे संभव बना सकता है। बेशक इससे भारतीय अर्थव्यवस्था में बढ़ोतरी दर्ज होगी तथा संबंधित क्षेत्र में साख भी बढ़ेगी। असल में इसरो की रणनीति महज अपने अंतरिक्ष यानों की संख्या बढ़ाने तक सीमित नहीं है। इस दौर में जब देश में कई स्पेस स्टार्टअप तेजी से उभर रहे हैं, इसरों की प्लानिंग है कि अंतरिक्षयान निर्माण में तमाम बड़ी निजी कंपनियों जैसे लार्सन एंड टुब्रो, गोदरेज, एचएएल, भारत इलेक्ट्रॉनिक्स, स्काईरूट, अग्निकुल, ध्रुव स्पेस तथा अन्य छोटे

स्टार्टअप्स को भी वह इस काम में बड़े पैमाने पर साझेदार बनाए ताकि इससे भारत में 'एयरोस्पेस मैन्युफेक्चरिंग इंडस्ट्री' का विकास तीव्र हो। वह अमेरिका में नासा और स्पेस-एक्स जैसे सरकारी एजेंसी और निजी कंपनी के आपसी सहयोग जैसे मॉडल को भारतीय परिस्थितियों में संभव बनाना चाहती है। इससे देश, संबंधित कंपनियों और आखिरकार इसरो को लाभ पहुंचेगा।

निजी क्षेत्रों को कर रहा प्रोत्साहित: जल्द ही भारत का पहला पूर्णतः स्वदेशी उद्योग-निर्मित पीएसएलवी इसी परिवर्तन की ज्वलंत निशानी बनेगा। इसरो खूब जानता है कि निजी क्षेत्र जितना बड़ा होगा, उसको उतनी ही सुविधा होगी। वह उन पर बहुत से तकनीकी और निर्माण कार्यों की जिम्मेदारी देकर अपना ध्यान ज्यादा से ज्यादा प्रक्षेपण कार्यक्रमों एवं अनुसंधान मिशनों पर केंद्रित कर पाएगा। इसरो को निजी-सरकारी कंपनियों के सहयोग से तीन गुनी यान निर्माण क्षमता हासिल हो गई, तो उसका परोक्ष प्रभाव यह भी होगा कि इसरो के वैज्ञानिक मिशन तेजी से पूरे होंगे, वाणिज्यिक लॉन्च बढ़ेंगे। ऐसे में भारत वैश्विक उपग्रह-निर्माण और प्रक्षेपण बाजार में बेहद कमाऊ और प्रभावी खिलाड़ी बन सकेगा। इनके अलावा इस क्षेत्र में आत्मनिर्भरता और ज्यादा बढ़ेगी, तो विदेशी कंपनियों पर निर्भरता कम होती जाएगी। बड़ी बात यह भी कि पांच मॉड्यूल वाला देश का अंतरिक्ष स्टेशन समय पर स्थापित करने की संभावना भी इससे मजबूत होगी।

कई स्तरों पर करनी होगी पहल: इसरो के सभी प्रोजेक्ट्स समय से पूरे हों, इस लिए भी इसरो को अपनी यान निर्माण क्षमता को तीन गुना बढ़ाने के लिए प्रेरित किया है। चंद्रयान-4 भारत के लिए अमेरिका के अपोलो कार्यक्रम की तरह विशिष्ट होगा। यह चंद्रमा से नमूने वापस लाकर भारत को उस सैंपल रिटर्न टेक्नोलॉजी में सक्षम बनाएगा, जो संसार के महज तीन देशों के पास है। इसी तरह जापान की अंतरिक्ष एजेंसी जाक्सा के साथ लूपेक्स मिशन, चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर बर्फ की मौजूदगी तलाश उसकी उपयोगिता समझने का अवसर देगा। यह भविष्य के मानव मिशनों के लिए ईंधन और पानी का स्रोत समझाएगा। भारत अपने अंतरिक्ष स्टेशन के पहले मॉड्यूल को 2028 तक पूरा करते हुए 2035 तक पांच मॉड्यूल वाला अंतरिक्ष स्टेशन स्थापित करना चाहता है। इस पूरे प्रकरण में सरकार की जो भूमिका हो सकती है, वह यह है कि उसके द्वारा अंतरिक्ष नीति और विनियमों को सरल बनाया जाए ताकि निजी निवेश, इसरो को लंबी अवधि की फंडिंग और स्टार्टअप ईकोसिस्टम को बढ़ावा मिले, मानव अंतरिक्ष उड़ान कार्यक्रम पर नियमित निवेश एवं निजी भागीदारी को गति मिले, जिससे इसरो अधिक प्रक्षेपण केंद्र और ट्रैकिंग स्टेशन स्थापित कर सके। अंतरराष्ट्रीय सहयोग के विस्तार पर भी सरकार को जोर देना होगा। फिलहाल इसरो का फैसला देश को वैश्विक अंतरिक्ष बाजार में आर्थिक शक्ति बनाएगा, लाखों नौकरियों का सृजन, युवा वैज्ञानिकों के लिए अवसर पैदा करेगा। *

कई प्रोजेक्ट्स पर हो रहा काम

इसरो के लिए आने वाला दशक निर्णायक है। इस वर्ष और अगले वर्ष में इसरो के पास आधे दर्जन से अधिक महत्वपूर्ण कार्यक्रम शेष हैं और अगले कुछ वर्षों में संचालित होने वाले इसरो के पूर्व नियत कई प्रमुख अभियान तो बहुत जटिल और महत्वाकांक्षी हैं। गगनयान के कई मानव-रहित परीक्षण, मानव सहित गगनयान, 2028 में जाने वाला चंद्रयान-4, जापानी अंतरिक्ष एजेंसी के साथ मिशन लूपेक्स, एसएसएलवी निर्माण तथा रि-यूजेबल लॉन्च व्हीकल का विकास, शुक्रयान और भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन, नई पीढ़ी के संचार उपग्रह जैसे कई महत्त्वाकांक्षी मिशन पर कार्य जारी है।

डिजिटल गेम्स वर्तमान है शानदार-उज्ज्वल है भविष्य

हाल के वर्षों में मनोरंजन के लिहाज से डिजिटल गेम्स का क्रेज जबर्दस्त तरीके से बढ़ा है, निरंतर इसमें इजाफा भी हो रहा है। खासतौर पर इसे लेकर नई पीढ़ी में बहुत दीवानगी देखी जाती है। इसकी क्या हैं वजहें और कैसा है भविष्य, जानिए।

टेक्नोलाइफ
लोकमित्र गौतम

आज के युग में मनोरंजन, शिक्षा और तकनीकी प्रयोग का सबसे लोकप्रिय माध्यम बन चुके हैं-डिजिटल गेम्स। मोबाइल, कंप्यूटर, टैबलेट और गेमिंग कंसोल के जरिए खेले जाने वाले ये खेल महज खेल नहीं हैं बल्कि आज की तारीख में अरबों रुपए का कारोबार भी है। नई पीढ़ी के बीच इन डिजिटल गेम्स का आकर्षण इतना अधिक है कि अब ये डिजिटल गेम्स एक पूरी संस्कृति का रूप ले चुके हैं।

क्या होते हैं डिजिटल गेम्स: डिजिटल गेम्स सही मायने में इलेक्ट्रॉनिक खेल होते हैं। इन्हें डिजिटल गेम इसलिए कहा जाता है, क्योंकि ये किसी डिजिटल डिवाइस के जरिए खेले जाते हैं। जैसे- कंप्यूटर, लैपटॉप, मोबाइल फोन, टैबलेट या वीडियो गेम कंसोल। डिजिटल गेम्स में ग्राफिक, ध्वनि और उपयोगकर्ता का सीधे-सीधे संपर्क या इंट्रैक्शन संभव है। यह इंट्रैक्शन या संपर्क दो तरीके से होता है। इसमें एक है वर्चुअल अनुभव। वास्तव में यह किसी अनुभव के आधार पर तैयार किए जाते हैं और यहीं इनकी भूमिका बदल जाती है। यह केवल शारीरिक सक्रियता या महज मनोरंजन का कारण नहीं होते बल्कि कभी-कभी सीखने, कभी रणनीति बनाने, कभी निर्णय क्षमता को परखने या उसे विकसित करने तथा कभी-कभी हीनभावना को दूर करने का तरीका भी होते हैं।

दीवानी है नई पीढ़ी: नई पीढ़ी में डिजिटल गेम्स को लेकर बहुत ज्यादा आकर्षण या कहें क्रेज है। विशेषकर जनरेशन जेड और अल्फा, डिजिटल दुनिया में जन्मी, पली-बढ़ी पीढ़ियां इन खेलों की दीवानी हैं। इसकी सबसे बड़ी वजह यह है कि इनका बचपन मोबाइल और इंटरनेट के साथ खेलते और इस्तेमाल करते हुए गुजरा। इसलिए डिजिटल गेम्स को ये मनोरंजन नहीं कहते बल्कि अपने व्यक्तित्व की पहचान, प्रतिस्पर्धा और आत्म अभिव्यक्ति का माध्यम मानते हैं।

इसलिए बढ़ रहा इतना क्रेज: नई पीढ़ी में डिजिटल गेम्स का इतना क्रेज इसलिए है, क्योंकि यह वास्तविक अनुभव देता है। आज के डिजिटल गेम्स में एक साथ वीआर यानी वर्चुअल रियलिटी और एआर यानी ऑग्मेंटेड रियलिटी का इस्तेमाल होता है, जिसे खिलाड़ी इन्हें दूर से खेलता हुआ नहीं लगता बल्कि खुद को वह खेल के भीतर का हिस्सा समझता है और खेल के रोमांच को पल-पल महसूस करता है। दुनिया के किसी कोने से किसी दोस्त के साथ, किसी अजनबी के साथ, इन खेलों को खेला जा सकता है यानी आज की डिजिटल लाइफ के अनुकूल ये ऑनलाइन गेम की सुविधा प्रदान करते हैं और सबसे आकर्षक बात यह है कि डिजिटल गेम्स, एक रिवॉर्ड सिस्टम से भी जुड़ा होता है यानी प्वाइंट, लेवल और खरीदारी के लिए वाउचर जैसी सुविधाओं का मौजूद होना खिलाड़ियों को अलग ही दुनिया के रोमांच से जोड़ देते हैं। आज की तारीख में डिजिटल गेम्स महज खेलने की डिजिटल गतिविधि भर नहीं हैं बल्कि यह एक किस्म की सामाजिक प्रतिष्ठा बन चुके हैं। युवाओं में गेमिंग अब अपने आपमें एक स्टेटस सिंबल बन चुका है। लोकप्रिय गेम्स में बेहतर प्रदर्शन करने वालों को सोशल मीडिया पर फॉलोअर्स और फैंस भी मिलते हैं। इस तरह डिजिटल गेम्स मनोरंजन करने के साथ-साथ हमारे तनाव मुक्ति का भी जरिया हैं। इस कारण भी युवाओं में डिजिटल गेम्स को लेकर जबरदस्त क्रेज है।

ऐसे हुई डिजिटल गेम्स की शुरुआत: वर्ष 1962 की बात है, एमआईटी यानी मैसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, अमेरिका में दो युवाओं ने मिलकर दुनिया का पहला डिजिटल गेम स्पेस वार बनाया। स्टीव रसेल और उनके दोस्त मार्टिन ग्रेट्ज ने पहले-पहल इस डिजिटल गेम्स की अवधारणा को 1961 में रखा था। लेकिन बाद के एक साल में उनके साथ उनके चार और दोस्त आ जुड़े, ये थे- वेन विटानन, पीटर सैमसन, डेन एडवर्ड्स और एलन कोटाक। इन सभी ने मिलकर दुनिया का पहला डिजिटल गेम्स स्पेस वार सीडीपी-1 कंप्यूटर पर बनाया। यहीं से आधुनिक वीडियो गेम उद्योग की शुरूआत हुई।

जहां तक भारत में डिजिटल गेमिंग की शुरुआत का सवाल है तो यह सन 1990 के दशक में आया, जब कंप्यूटर और इंटरनेट भी धीरे-धीरे आम लोगों तक पहुंचने लगे थे। भारत का पहला स्वदेशी डिजिटल गेम 'भारतः द गेम' (1998) माना जाता है, जिसे सिनका गेम्स कंपनी ने विकसित किया था। हालांकि गेम बहुत अधिक लोकप्रिय नहीं हुआ।

डिजिटल गेम्स का भविष्य: जहां तक डिजिटल गेम्स की दुनिया के भविष्य का सवाल है तो यह बेहद उज्ज्वल और तकनीकी रूप से बेहद रोमांचक है। साल 2025 में वैश्विक गेमिंग इंडस्ट्री बढ़कर 250 अरब अमेरिकी डॉलर की हो चुकी है और इसमें बहुत बड़ा हिस्सा भारत के डिजिटल गेम्स प्रेमियों का भी है। क्योंकि साल 2024 के अंत तक भारत में सक्रिय गेम्स की संख्या बढ़कर 40 करोड़ हो चुकी है। शायद यह डिजिटल गेमिंग का ही विस्तार है कि आज ई-स्पोर्ट्स की दुनिया बड़े पैमाने पर उभरी है और लाखों लोग इसे अपना करियर बनाकर अपना भविष्य आर्थिक रूप से सुरक्षित कर रहे हैं। *

कविता
पुरुषोत्तम व्यास

गिरना भी अच्छा होता

कभी-कभी गिरना भी अच्छा होता,
गिरने से संभलना सीखते
फिर चलना सीखते।
समझ में आता है
अति हर चीज की
अच्छी होती नहीं,
बात-बात पर अहंकारी,
और ज्यादा ज्ञानी
समझने से बच जाते।
बात यह भी जरूरी है कि
गिरने को किस रूप में देखते हो,
विचलित होते हो या
नए साहस से आगे बढ़ते हो
गिरने से दिमाग भी
ठिकाने रहता
अपने और पराए पर
पर्दा उठ जाता।
अगर गिरे तो फिर
नए रूप लेकर उठो
नए विचार लेकर उठो
बेफिक्र होकर जीना सीखो
इसलिए कभी-कभी
गिरना भी अच्छा होता है।

व्यंग्यात्मक संस्मरण
डॉ. मुकेश असीमित

टिकट विंडो की लाइन

रेलवे स्टेशन की टिकट विंडो आजकल किसी आध्यात्मिक तप जैसी लगती है। अमृत योजना का थोड़ा-बहुत बजट खर्च कर चार खिड़कियां बना दी गई हैं, पर चारों के सामने उतनी ही लंबी लाइनें, मानो चार अलग-अलग धर्मपंथ हों और भक्त सभी जगह समान संख्या में हों।

मैं बड़ी होशियारी से सबसे छोटी लाइन में लगा, और जैसे ही लगा किस्मत मेरी गर्दन पकड़कर मुझ पर हंस रही हो जैसे। मेरी लाइन कछुए की चाल से और बाजू वाली लाइन खरगोश की गति से फुर्र-फुर्र बढ़ती जा रही थी।

खिड़की पर एक बुजुर्ग बाबू थे, शायद रिटायरमेंट के ठीक पहले के अंतिम वर्ष में। चश्मा उतारते, लगाते, की-बोर्ड को किसी वेद-पाठ की तरह एक-एक अक्षर छूते। स्क्रीन पर अक्षर प्रकट होता तो उनके चेहरे की झुर्रियां भी खिल उठतीं, मानो तकनीकी उन्नयन का चमत्कार उन्हें रोज नई जवानी दे रहा हो। रेलवे ने शायद फैसला कर रखा है कि यह महाशय अपना अंतिम प्रण और अंतिम प्रणय दोनों इसी खिड़की पर छोड़ेंगे।

इतने में एक दुबला-पतला अधेड़ मेरी कोहनी पसलियों में गड़ाता हुआ फुसफुसाया, 'कौनसी ट्रेन चाहिए साहब? बोलो तो जुगाड़ कर दूं, अंदर तक पहुंच है। बस सौ का एक नोट एक्स्ट्रा।'

मैंने विनम्रता से मना कर दिया। विनम्रता पर उसने जर्दे-भीगे होंठों से मोबाइल और मुझे संयुक्त रूप से एक गाली दी और फुर्र हो गया। उसकी प्रतिक्रिया खीझ से उत्पन्न हुई, जैसे कोई एक डील होते-होते रह गई हो।

मोबाइल ही आजकल इन लंबी लाइनों का आधुनिक तपो-साधन है, सभी यात्री उसमें गुम। मैं भी व्हाट्सएप की दुनिया में तल्लीन था, तभी आगे शोर हुआ। एक यात्री जिसकी ट्रेन छूटने वाली थी, लाइन तोड़कर हथेली खिड़की के नैनो साइज के छेद में घुसा चुका था कि दूसरा यात्री अपना हाथ निकाल ही नहीं पा रहा था। अब विवाद यह नहीं कि किसकी बारी, बल्कि यह कि सबसे पहले हाथ कौन निकाले!

बाबू ने सीटी बजाई। दो पुलिसकर्मी अपनी तोंदें, बाल्टी की तरह लटकाते हुए आए। लाठी को हवा में घुमाते हुए स्थानीय भाषा में अपशब्दों का ऐसा समन्वित गान किया कि लाइन तुरंत सीधी हो गई। दोनों यात्रियों के हाथ बड़ी मुश्किल से निकाले गए। इस खींचतान में एक की हस्त-धारित भारतीय मुद्रा फट गईं और उसके मुंह से निकली गालियां व्यवस्था की संपूर्ण संस्थाओं को समर्पित थीं, रेलवे, सरकार, मंत्री से लेकर कुली तक कोई नहीं छूटा।

मैं फिर मोबाइल में चला गया। नया वर्ष आने में महीना है लेकिन कंपनियां जैसे चाहती हैं कि इस बार मैं चार नए कपड़ों, दो नई चॉकलेटों और पांच नए कूपनों से लैस रहूं। ऑफर ऐसे कि लगता है हर कंपनी ने मेरे लिए ही सुकुमारी ब्रांड की मॉडल को विज्ञापन में खड़ा किया है। एक बार जल्दबाजी में मैंने सुकुमारी के मोहपाश में बंधे सब्सक्रिप्शन डाल दिया था, तभी से वह मेरे जीवन की स्थाई सदस्य बन चुकी है।

मोबाइल भी क्या करे। कंपनियां चाहती हैं कि आप दिन-रात उसी से चिपके रहो। कभी धमाका सेल, कभी फ्लैश सेल, कभी लास्ट स्टॉक, हड़प लो!

नई पीढ़ी को ये सेल-ऑफर ऐसे जकड़ती है कि किसी उल्टे-सीधे काम में ऊर्जा लगे, उससे अच्छा है कि स्क्रीन पर अंगूठा फिसलाते रहो। गेम्स, जुआ, सट्टा, लॉटरी सब आपके दरवाजे पर नहीं, आपकी जेब में बैठा है।

इधर मेरा मोबाइल भी मेरा पूरा जीवन समझता है- कब रिचार्ज खत्म होगा? कब बीमा एक्सपायर होगा? कब कार की सर्विसिंग करानी है?

कब पुरानी कार बेचे चार साल हो गए? यह सब याद दिला रहा है।

सच कहूं तो मोबाइल ने आदमी को अकेला किया, या अकेलापन आदमी को मोबाइल तक ले गया, ये तफरीक अब मैं भी नहीं कर पाता।

मोबाइल पर आध्यात्मिक गुरुओं के संदेश, प्रेरक कथन और भविष्यवाणियां भी तड़ातड़ आ रहे हैं। सुबह-सुबह इतनी 'ज्ञान-वर्षा' कि दिमाग की हार्ड डिस्क फुल होकर ओवरहीट हो जाए। पर सही कहूं, रेलवे की लाइनें और मोबाइल दोनों ही हमारी लोकतांत्रिक व्यवस्था की लाइफलाइन हैं। एक में लगकर देश चलता है और दूसरे में खोकर आदमी। इतने में मेरी लाइन भी दो-चार इंच आगे बढ़ गई।

शायद मेरे नंबर का भी समय आ रहा था और मोबाइल पर एक नया मैसेज भी। *

लघुकथा / सतीश उपाध्याय

दरवाजा

मम्मी, दादाजी की वजह से हमारी पढ़ाई डिस्टर्ब होती है, बार-बार हमारे कमरे में आ जाते हैं।' परेश ने अपनी मां से दादाजी की शिकायत की। सामने कुर्सी पर बैठे दादाजी अखबार पढ़ रहे थे, वह तुरंत बोले, 'नहीं बेटा, ऐसी बात नहीं है। तुमको मैंने तीन घंटे से नहीं देखा था, इसलिए ऐसे ही तुम्हें देखने तुम्हारे कमरे में चला आया था।' परेश की मम्मी बेटे का पक्ष लेते हुए बोलीं, 'बाबूजी, थोड़ा बुद्धि से काम लिया करिए। स्कूल से कितना होमवर्क मिलता है, असाइनमेंट पूरा करना होता है। अगर वह आपसे बात करेगा तो उसका होमवर्क कैसे पूरा हो पाएगा?' दादाजी आहिस्ता से बोले, 'बेटा बात सही है, अब मैं आगे से ध्यान रखूंगा।' अगला दिन छुट्टी का था। परेश सारा दिन अपने लैपटॉप और मोबाइल में ही बिजी था। दादाजी के भीतर अपने पोते के प्रति प्यार उमड़ा तो वह अपने आपको रोक नहीं पाए। परेश के कमरे में चले गए। परेश के बेड पर स्कूल की कॉपी-किताबें बिखरी हुई थीं। वह मोबाइल में बिजी था। उसने दादाजी की आहट सुनी, लेकिन वह दादाजी की उपेक्षा करते हुए अपने मोबाइल में ही लगा रहा। दादाजी ने पूछा, 'क्या कर रहे हो बेटा?' परेश रूखे स्वर में बोला, 'दादाजी देख नहीं रहे हैं, मैं अपना असाइनमेंट पूरा कर रहा हूं। आप डिस्टर्ब मत करिए।' 'ठीक है बेटा, कितना समय लगेगा, इसे पूरा करने में?' दादाजी ने बड़े प्यार से पूछा। 'दादाजी मैं अभी कैसे बता दूं, आप डिस्टर्ब मत कीजिए प्लीज।' परेश ने तेज स्वर में बोला। 'ठीक है बेटा, मैं नीचे तुम्हारा इंतजार कर रहा हूं।' यह कहकर दादाजी ने कमरे से बाहर निकलते समय पलटकर देखा, परेश अपने मोबाइल में लगा दिखा। दादाजी के कमरे से निकलते ही परेश ने अपने कमरे का दरवाजा तेज आवाज के साथ बंद कर दिया। दादाजी कुछ देर दरवाजे के पास भाव शून्य खड़े रहे। उनकी आंखों में एक नमी उतर आई थी। *

पुस्तक: छवि से अलग (संस्मरण), **लेखक:** विनोद दास, **मूल्य:** 295 रुपए, **प्रकाशक:** सेतु प्रकाशन, नोएडा

पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

छवि से अलग

हाल में ही वरिष्ठ साहित्यकार विनोद दास के संस्मरणों की पुस्तक 'छवि से अलग' छपकर आई है। इसमें चौदह नामचीन साहित्यकारों के साथ ही पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी से जुड़ा संस्मरण भी संकलित है। इन संस्मरणों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इनमें सम्मिलित हस्तियों की कई अनावृत्त रही छवियां उजागर होती हैं। ये छवियां उनके साहित्यिक ही नहीं व्यक्तिगत जीवन से भी जुड़ी हुई हैं। लेखक ने निरपेक्ष भाव से इनकी खूबियों और खामियों को सामने रखा है। इसके साथ ही साथ कई संस्मरणों में लेखक, समानांतर रूप से उस देश, काल और परिस्थितियों का भी वर्णन करते चलते हैं, जब इन अनुभूतियों को वे अर्जित कर रहे थे। निर्मल वर्मा, नामवर सिंह, श्रीलाल शुक्ला, कुंवर नारायण, केदारनाथ सिंह, अखिलेश, शानी और मुद्राराक्षस जैसे कई साहित्यकारों के बारे में यह किताब बहुत कुछ अनसुना बताती है। *

अगर आपको गांव की खूबसूरती, वहां का प्राकृतिक वातावरण लुभाता है, साथ ही पक्षी प्रेमी भी हैं तो आपको इस मौसम में 'भारत का पक्षी गांव' के नाम से प्रसिद्ध मेनार गांव जरूर जाना चाहिए। किस तरह से मेनार गांव, पक्षी-प्रकृति संरक्षण की मिसाल बन गया है, वहां से लौटकर बता रहे हैं लेखक अपनी जुबानी।

पक्षी संरक्षण की मिसाल मेनार गांव

पर्यटन स्थल

समीर चौधरी

हाल ही में मैं उदयपुर घूमने गया था। जब मुझे स्थानीय लोगों से पक्षी संरक्षण के लिए मशहूर मेनार गांव के बारे में पता चला तो खुद को रोक नहीं पाया। राजस्थान के खूबसूरत शहर उदयपुर के नजदीक स्थित मेनार गांव में मैं बिना किसी असुविधा के बिल्कुल सुबह पहुंच गया था। सुबह होते ही मेनार में चिड़ियों का चहचहाना हर ओर से सुनाई पड़ने लगता है। खासतौर पर मानसून के बाद सर्दी के मौसम की शुरुआत होने पर यह नजारा बहुत मनभावन लगता है, जब दूर देशों से बड़ी संख्या में पक्षी जाड़ों के अपने इस आवास में लौटने लगते हैं। दशकों से मेनार 100 से अधिक स्थानीय और ठंडे इलाकों से पलायन करके आने वाले पक्षियों का अभयारण्य बना हुआ है। यहां आने वाले प्रमुख पक्षियों में फ्लेमिंगो,

पेलिकन, कूटस और लुप्त होने की कगार पर पहुंच चुका सारस क्रेन भी शामिल हैं। इन्हें देखने के लिए दूर-दूर से पक्षी प्रेमी यहां आते हैं।

ग्रामीणों की भूमिका महत्वपूर्ण: मेनार गांव की विशेषता केवल इसकी जैव-विविधता ही नहीं है बल्कि यहां के लोग भी हैं, जिनकी वजह से पक्षी संरक्षण संभव हो सका है। मेनार के लोगों का यहां आने वाले मेहमान पक्षियों से लगाव का सिलसिला लगभग दो शताब्दी पहले आरंभ हुआ था। मुझे स्थानीय लोगों ने ही बताया कि वर्ष 1832 में यहां की एक झील के किनारे किसी ब्रिटिश अधिकारी ने एक पक्षी को गोली मार दी थी। उससे नाराज ग्रामीणों ने तुरंत ही उस ब्रिटिश व्यक्ति को गांव से बाहर जाने पर मजबूर कर दिया। यह कहानी लोककथा बन गई और इसी ने मेनार के पक्षी प्रेम और संरक्षण की आधारशिला रखी। समय के साथ मेनार के लोगों ने अपने तालाबों (ब्रह्म तालाब, धंड तालाब और खेरोड़ा तालाब) को जीवंत वेटलैंड्स में बदल दिया। इनके प्रयास रंग लाए। मेनार को आधिकारिक तौर पर राजस्थान के पहले पक्षी गांव के रूप में मान्यता मिल गई और उसे रामसर साइट (अंतरराष्ट्रीय महत्व का वेट लैंड, जो जीव संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है) घोषित किया गया। मेनार को वर्ष 2023 में भारत के सर्वश्रेष्ठ पर्यटन गांवों में भी शामिल किया गया।

जागरूक हैं स्थानीय निवासी: मेनार में पक्षियों को देखते हुए मेरी मुलाकात स्थानीय निवासी दर्शन मेनारिया से हुई, जो पक्षी-मित्र कहे जाते हैं। अपनी इस पहचान पर उन्हें गर्व है। हालांकि वह एक विद्यालय में अध्यापक

भी हैं। दर्शन कितना भी व्यस्त रहें, अगर उन्हें किसी पक्षी के चहचहाने की आवाज सुनाई पड़ती है तो वह पक्षियों के गीत सुनने में मगन हो जाते हैं। वे अपने छात्रों से भी कहते हैं कि पक्षियों के गीत को सुनो। जब छात्र पक्षी को देखेंगे और पहचानेंगे, तभी वे वास्तव में उनकी देखभाल करेंगे, उनके संरक्षण में अपना योगदान देंगे।

ऐसे किया जा रहा संरक्षण: मेनार में पक्षी संरक्षण केवल जागरूकता का विषय नहीं, वहां की जीवनशैली का हिस्सा बन चुका है। यहां धार्मिक रीति-रिवाजों का आयोजन झील के किनारों पर किया जाता है ताकि मानव और प्रकृति का संबंध मजबूत किया जा सके। यहां मछली पकड़ने और गर्मी में की जाने वाली खेती को स्थानीय लोगों ने अपनी इच्छा से बंद कर दिया है ताकि पक्षियों के ठहरने की जगहों को सुरक्षित रखा जा सके। झीलों से पानी भी बहुत कम निकाला जाता है। ग्रामीण अपनी जरूरतों के साथ पक्षियों की जरूरतों का भी पूरा ध्यान रखते हैं।

सरकारी प्रयासों की बात करें, तो राजस्थान वन विभाग द्वारा प्रशिक्षण प्राप्त पक्षी-मित्र हाथ में बाइनोक्यूलर्स (दूरबीन) लेकर सुबह-शाम को झीलों की निगरानी करते हैं। वे यहां आने वाले पक्षियों की गतिविधियों, पलायन पैटर्न को ऑब्जर्व करते हैं और खतरे की स्थिति में सावधान करते हैं। इस स्थानीय निगरानी ने न केवल सामान्य जलमुर्गियों को सुरक्षित रखने में मदद की है बल्कि उन प्रजातियों के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जिन पर लुप्त होने का खतरा मंडरा रहा है।

बन चुकी है डॉक्यूमेंट्री फिल्म: फिल्म मेकर गुंजन मेनन ने मेनार की कहानी को अपनी अवॉर्ड-विनिंग डॉक्यूमेंट्री 'विंग्स ऑफ होप' (उम्मीदों के पर) में भी प्रस्तुत किया है। वह इसे 'विश्वसनीय नेतृत्व की कहानी' कहती हैं। इस फिल्म में उन्होंने बताया कि जमीनी प्रयासों से वह हासिल किया जा सकता है, जो अकसर बड़े पैमाने की नीतियों या बड़े बजट से नहीं मिलता।

बहरहाल, मेनार गांव देश ही नहीं, दुनिया भर के पक्षी प्रेमियों के लिए मिसाल बन गया है। *

जब करें घने कोहरे में ड्राइविंग रखें इन बातों का खास ध्यान

सर्दी के मौसम में जब घना कोहरा छाया हो, तो विजिबिलिटी बहुत कम हो जाती है। ऐसे में ड्राइविंग बेहद चुनौतीपूर्ण हो जाता है। थोड़ी सावधानी और कुछ जरूरी बातों का ध्यान रखकर आप धुंध वाले मौसम में भी सेफ ड्राइव कर सकते हैं।

सजगता

विवेक कुमार

हालांकि अभी बहुत अधिक ठंड नहीं हो रही है लेकिन आने वाले दिनों में इसमें इजाफा होगा। हाड़ कंपा देने वाली भीषण ठंड और घने कोहरे में वाहन चलाना बहुत चुनौती भरा काम होता है। देर रात में या पौ फटने से पहले सुबह के समय कोहरे के कारण जब विजिबिलिटी का स्तर कम हो जाता है, तब ड्राइविंग करना और मुश्किल होता है। ऐसे में अगर आपके लिए कहीं जाना बेहद जरूरी है और आप अपने वाहन से जा रहे हैं, तो घने कोहरे में सुरक्षित सफर के लिए कुछ बातों का ध्यान रखें।

ड्राइविंग पर फोकस्ड रहें: ड्राइविंग करते समय मोबाइल फोन पर किसी से बात करना, बगल में या पीछे सीट पर बैठे व्यक्ति के साथ लगातार बात करना, म्यूजिक सुनना, इन

तमाम कामों से आपका फोकस ड्राइविंग से हट सकता है। घने कोहरे में अगर आप ड्राइविंग कर रहे हैं तो आपका ध्यान पूरी तरह ड्राइविंग पर ही केंद्रित रहना चाहिए। सामान्य दिनों में भी इस तरह की सावधानी बरतनी चाहिए।

स्पीड कम रखें: कोहरे में गाड़ी बहुत धीमी गति में चलानी चाहिए। इससे दुर्घटना होने की आशंका तो कम होती ही है, किसी भी तरह की दुर्घटना होने पर नुकसान ज्यादा नहीं होता है। अपने आगे चलने वाले वाहन के बीच पर्याप्त गैप रखते हुए धीरे-धीरे ड्राइव करें। इससे आपको अचानक ब्रेक लगाने या गति बदलने के लिए पर्याप्त समय मिल जाता है। कोहरे में गाड़ी ड्राइव करते समय अचानक अपनी लेन बदलने से भी बचें, क्योंकि विजिबिलिटी कम होने के कारण आपकी गाड़ी की गति और दिशा का अनुमान पीछे से आने वाले दूसरे वाहन का चालक नहीं लगा पाता है, इससे एक्सीडेंट की संभावना होती है।

सावधानी से गाड़ी मोड़ें: अगर आपको किसी मोड़ पर अपनी गाड़ी मोड़नी है तो अपनी गाड़ी की गति पहले से ही धीमी कर लें, क्योंकि कोहरे में बिल्कुल करीब की भी चीज दिखाई नहीं देती है। ऐसे में अगर गाड़ी मोड़ते समय गति तेज हुई तो दुर्घटना होने का डर रहता है। धुंध में ओवरटेकिंग करना बहुत खतरनाक हो सकता है, क्योंकि विजिबिलिटी बहुत कम होने से यह नहीं दिख पाता है कि आगे कोई वाहन है या नहीं और उसकी स्पीड कितनी है? इसलिए कोहरे में यथासंभव गाड़ी धीमे चलाएं और ओवर टेकिंग करने से बचें।

वाहन को रोक दें: यदि विजिबिलिटी बहुत ही कम हो, तो सड़क के किनारे सुरक्षित जगह पर गाड़ी को रोक कर थोड़ा कोहरा छंटने का इंतजार करना चाहिए। अपनी गाड़ी को जब सड़क पर किनारे खड़ा करें तो कार की हैजार्ड लाइट चालू रखें ताकि सड़क पर चलने वाले दूसरे वाहन आपकी कार को देख सकें और सुरक्षित तरीके से बगल से निकल जाएं।

विंडोज-विंड स्क्रीन को साफ रखें: घने कोहरे और ओस की बूंदों के कारण विंडोज और विंड स्क्रीन पर लगा सीसा बार-बार धुंधला हो जाता है। ऐसे में विजिबिलिटी और भी कम हो जाती है। इससे बचने के लिए बीच-बीच में वाइपर चलाते रहें। कार के हीटर ऑन कर वाहन के अंदर से ही इन

पर जमने वाली भाप को कम किया जा सकता है। अधिक दिक्कत होने पर गाड़ी से उतर कर साफ कपड़े से इन्हें साफ करना चाहिए।

रेट्रो रिफ्लेक्टर टेप लगवाएं: अपनी कार के पीछे लाल रेट्रो रिफ्लेक्टर टेप लगवाने से आपके पीछे चलने वाले वाहन को आपके वाहन की स्थिति पता चलती रहती है। इससे दोनों की सुरक्षा सुनिश्चित होती है और दुर्घटना की आशंका से भी बचा जा सकता है। *

नदी गाथा

वीना गौतम

वैसे तो जम्मू-कश्मीर में कई मनोहारी झीलें और नदियां हैं। इन्हीं में से एक तवी नदी न केवल अपने प्रवाह सौंदर्य के लिए, अपनी धार्मिक-सांस्कृतिक महत्ता और अपनी गोद में समेटे जैव विविधता के लिए भी जानी जाती है।

महज जलधारा ही नहीं जम्मू की सांस्कृतिक आत्मा है तवी नदी

नदियां जीवनदायिनी होती हैं। नदियों के किनारे ही दुनिया की सभी सभ्यताएं और संस्कृतियां फली-फूली हैं। धरती पर नदियों के बिना जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। लेकिन जलवायु परिवर्तन, बढ़ती आबादी और नदियों के प्रति आम लोगों की उदासीनता के चलते धरती पर जल संकट तो गहराया ही है, अब नदियों के अस्तित्व पर भी संकट के बादल मंडरा रहे हैं। इसलिए नदियों का न केवल संरक्षण जरूरी है बल्कि हमें अपनी नई पीढ़ियों को इनके प्रति संवेदनशील भी बनाना जरूरी है ताकि इनका अस्तित्व बचा रहे और धरती पर इंसानी सभ्यता और संस्कृति भी हमेशा की तरह फलती-फूलती रहे। ऐसी ही एक महत्वपूर्ण और सुंदर नदी तवी, जम्मू शहर से होकर प्रवाहित होती है। जैसे किसी जीवंत शरीर में हृदय धड़कता है, वैसे ही जम्मू के लिए तवी की निरंतर बहती धारा है। यह नदी महज पानी की धार नहीं बल्कि जम्मू की सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और भावनात्मक पहचान का आधार स्तंभ है। स्थानीय डोगरा समाज में तवी को सूर्य पुत्री कहा जाता है यानी, एक ऐसी बेटी, जिसे सूर्य देव से जीवन मिला हो। यही उसकी आध्यात्मिक और सांस्कृतिक महत्व का आधार माना जाता है।

नदी का उद्भव और प्रवाह: तवी नदी शिवालिक पर्वतों की गोद से जन्मती है। सुधमाहादेव के निकट डोडा जिले के कैलाश कुंड ग्लेशियर से इसका उद्गम माना जाता है।

तवी के किनारे स्थित बाग-ए-बहू का मनोरम दृश्य

4,220 मीटर की ऊंचाई से उतरकर यह नदी 141 किलोमीटर का सफर तय करके अखनूर के पास चिनाब नदी में मिल जाती है। अपने प्रवाह में यह पहाड़ी पत्थरों, झाड़ियों, घास के मैदानों और घाटियों को चीरते हुए आगे बढ़ती है। तवी नदी का प्रवाह इसे एक युवा नदी के रूप में दर्शाता है। क्योंकि इसका प्रवाह तेज, पथरीला और जल स्वच्छ होता है। गर्मियों में चूंकि हिमालय में बर्फ पिघलती है, इसलिए गर्मी के मौसम में इसमें पानी बढ़ जाता है, जबकि सर्दियों में नदी शांत और सक्रिय हो जाती है। इन दोनों मौसमों के विपरीत मानसून के आते ही तवी का शक्तिशाली और प्रचंड रूप देखने को मिलता है।

पौराणिक-धार्मिक महत्ता भी है बहुत: तवी का स्थान केवल भूगोल में ही महत्वपूर्ण नहीं है, पौराणिक आख्यानों और लोक-साहित्य में भी यह रची बसी है। सूर्य पुत्री कही जाने वाली तवी की मान्यता, डोगरा राजवंश के इतिहास की सांस्कृतिक धुरी मानी जाती है। जम्मू का प्रतिष्ठित बहू-किला इसी नदी के किनारे स्थित है। इसी के किनारे स्थित बाग-ए-बहू बागीचा, महामाया मंदिर और उसके पास की घाटियां, तवी को सौंदर्य की देवी का दर्जा देती हैं। तवी की वजह से ही ये स्थल इस शहर की आकर्षक धरोहरों में शामिल हैं। प्राचीन मंदिरों, धार्मिक अनुष्ठानों में भी तवी नदी की भूमिका हमेशा रही है। डोगरा राज परिवार के संस्कार, पूजा-तीर्थ, अर्पण और पितृ श्रद्धा इसी नदी के तट पर संपन्न होती है। छठ पर्व, मकर संक्रांति, डोगरा मेलों और विशेष पूजा अर्चनाओं का केंद्र तवी नदी के तट ही होते हैं। शिवरात्रि में यहां विशेष उत्सव संपन्न होता है। डोगरी लोकगीतों में बार-बार तवी नदी का जिक्र आता है। यहां एक उक्ति बहुत प्रचलित है, 'तवी दे पाणियां वर्गे, सच्चे ने जम्मू दे लोग।' यानी तवी के पानी की तरह ही जम्मू के लोगों का मन भी निर्मल है। तवी जम्मू की आत्मा है। इसके रिवर फ्रंट, घाटों और हरित पट्टियों के माध्यम से यह नदी एक सांस्कृतिक स्थल के रूप में पुनर्जीवित हो रही है।

अखनूर फोर्ट के पास से प्रवाहमान तवी नदी

मौजूद है समृद्ध जैव विविधता: सिर्फ संस्कृति ही नहीं जम्मू क्षेत्र के पर्यावरण का भी मूल आधार तवी नदी ही है। इसकी घाटी में समृद्ध जैव विविधता पाई जाती है। देवदार, चीड़, शीशम, क्राप, पॉपुलर तथा अनेक औषधीय पेड़ इसके किनारे पनपते हैं और इसको समृद्ध वनस्पति स्थल बनाते हैं। इसी तरह तवी घाटी में हिमालयी लंगूर, पहाड़ी लोमड़ी, जंगली बिल्ली और काला भालू जैसे जीव जंतु भी पाए जाते हैं। इनके अलावा यहां किंग फिशर, उल्लू, बगुले, पहाड़ी गौरैया जैसे पक्षी इसकी जैव विविधता की गाथा कहते हैं। इसी में ट्राउट, महाशीर और क्रॉप जैसी मछलियों की भी उपस्थिति इसे खास बनाती है।

कई तरह से है उपयोगी: तवी का तेज प्रवाह इसका पथरीला तल इसे देश की दूसरी नदियों की अपेक्षा बेहद स्वच्छ रखता है। यह चिनाब की प्रमुख सहायक नदी है और सिंध प्रणाली में जल उपलब्धता बढ़ाने पर अपना योगदान देती है। इसके तलों पर उगने वाली घास और वृक्ष, नदी के कटाव को रोकते हैं और जैविक स्थिरता बनाए रखते हैं। शहर के मध्य से गुजरते समय इसका घुमावदार प्रवाह बहुत आकर्षक लगता है। यह जम्मू शहर के पेय जल की प्रमुख स्त्रोत है। साथ ही इससे जम्मू, उधमपुर और अखनूर जिलों की कृषि भूमि सिंचित होती है।

चुनौतियां हैं कई: हर नदी की तरह तवी के भी कुछ संकट हैं, जैसे शहर का बहने वाला नाला, कचरा और सीवेज इसे बीमार बनाता है। अवैध रेत खनन इसे घायल करता है और शहरीकरण का बढ़ता बोझ इसके विस्तार को छीनता जा रहा है, जो इसके जलस्तर में कमी का प्रमुख कारण बनता है। तवी महज एक नदी नहीं बल्कि जम्मू की सांस्कृतिक, भौगोलिक और ऐतिहासिक धरोहर है। इसे इतिहास की धड़कन और संस्कृति की आत्मा कहते हैं। जम्मू शहर की इस पहचान को संरक्षित किया जाना बहुत आवश्यक है। *

बड़ा पर्दा

हेमंत पाल

श्याम बेनेगल की 'अंकुर' में दिखा जीवन यथार्थ

बिमल रॉय की यथार्थपरक फिल्म 'दो बीघा जमीन'

जीवन-समाज की सच्चाई दिखाता यथार्थपरक समानांतर सिनेमा

फिल्म निर्माण के शुरुआती दिनों से ही फिल्मकारों ने जीवन और सामाजिक यथार्थ को अपनी फिल्मों का विषय बनाना शुरू कर दिया था। हालांकि यह सामाजिक यथार्थ, पैरेलल सिनेमा में देखने को मिलता है। समानांतर सिनेमा को समृद्ध करने वाले फिल्मकारों और हिंदी सिनेमा में इस ट्रेंड पर एक नजर।

भारतीय सिनेमा में यथार्थवाद की झलक बहुत पुरानी बात है। ऐसी फिल्मों की नींव सन 1920 से 30 के दशक में ही पड़ गई थी, जब 1925 में बाबूराव पेंटर ने अपनी मूक फिल्म 'सावकारी पाश' बनाई, जिसमें वी. शांताराम ने गरीब किसान का किरदार निभाया था। वह किसान अपनी जमीन एक साहूकार को देने के लिए मजबूर हो जाता है और गांव छोड़कर शहर में मिल मजदूर बन जाता है। इसे भारत की पहली समानांतर फिल्म माना जाता है। साल 1937 में महिलाओं की दुर्दशा पर बनी फिल्म 'दुनिया ना माने' को भी समानांतर फिल्म की श्रेणी में ही रखा जाता है। समानांतर सिनेमा यानी पैरेलल सिनेमा को 'आर्ट सिनेमा' या 'नया सिनेमा' के नाम से भी जाना जाता है। माना जाता है कि हमारा समानांतर सिनेमा इटैलियन न्यू रियलिज्म, फ्रांस के फ्रेंच न्यू वेव और जापान के न्यू वेव सिनेमा से प्रभावित रहा है।

समानांतर सिनेमा ने ली नई करवट: शुरुआती 1920-30 के दशक में भले ही समानांतर सिनेमा बनाने के कुछ प्रयोग किए गए, लेकिन तब ये परंपरा कुछ खास आगे नहीं बढ़ सकी। सन 1940 से 1960 के दशक में समानांतर सिनेमा ने फिर से करवट ली। इस दौर में सत्यजीत रे, ऋत्विक घटक, बिमल राय, मृणाल सेन, ख्वाजा अहमद अब्बास, चेतन आनंद, वी. शांताराम जैसे दिग्गज फिल्मकारों ने इसे पल्लवित किया। इनकी फिल्मों पर साहित्य की गहरी छाप देखने को मिलती है। चेतन आनंद ने 1946 में 'नीचा नगर' जैसी बेहतरीन फिल्म बनाई। कान फिल्म फेस्टिवल में इस फिल्म को 'ग्रांड प्रिक्स डू फेस्टिवल' पुरस्कार मिला। इस तरह कान फिल्म फेस्टिवल में पुरस्कार पाने वाली पहली भारतीय फिल्म बनी-'नीचा नगर'। समानांतर फिल्मों की इस परंपरा को श्याम बेनेगल, गोविंद निहलानी, अदूर गोपालकृष्णन, गिरीश कासरवल्ली, मृणाल सेन, ऋत्विक घटक जैसे फिल्मकारों ने आगे बढ़ाया।

दिखता है जीवन का यथार्थ: समानांतर सिनेमा में जीवन और समाज का यथार्थ बहुत गहराई से दिखाया जाता रहा है। यह हिंदी सिनेमा का वह पक्ष है, जिसमें आम आदमी के जीवन की जद्दोजहद, सामाजिक असमानता और बदलाव को दर्शाया जाता है। फिल्मों के कथानक में यथार्थ को पूरी शिद्दत के साथ प्रस्तुत करने का यह चलन 1950 के दशक में पश्चिम बंगाल से शुरू हुआ और बाद में इसे हिंदी समेत हर भाषा के सिनेमा ने अपनाया। इसका मकसद जीवन के कठोर यथार्थ, समाज के हाशिए पर खड़े वर्गों, दलितों, महिलाओं और गरीबों की समस्याओं को दर्शकों के सामने लाना रहा, जिससे दर्शक खुद को जुड़ा महसूस करे। इन फिल्मों की यथार्थ परक कहानियां, आम लोगों की सामाजिक और आर्थिक जिंदगी से जुड़ी होती हैं। गरीबी, अशिक्षा, बेरोजगारी, शहरी-ग्रामीण भेद, आर्थिक विषमताएं, जातिगत भेदभाव, स्त्री-पुरुष संबंध, नारी सशक्तिकरण जैसे मुद्दे समानांतर सिनेमा की पहचान रहे हैं। ये फिल्में पारंपरिक सिनेमा की तरह मनोरंजन या सपनों की दुनिया पर नहीं, बल्कि समाज की सच्चाइयों को विषय वस्तु बनाकर, बदलाव और सवाल उठाए जाने पर बल देती हैं। समानांतर सिनेमा का मकसद दर्शक को यथार्थ के करीब लाना और सांस्कृतिक-सामाजिक बदलाव की चेतना को जगाना रहा है। ये फिल्में भारतीय समाज के आइने का काम करती हैं।

दिखाई जाती है सामाजिक त्रासदी: समानांतर सिनेमा को जीवन का यथार्थ कहा जरूर जाता है, लेकिन यह आधा सच ही है। क्योंकि समानांतर सिनेमा का कैमरा हमेशा दमित और शोषित वर्ग पर ही फोकस होता रहा है। जबकि सिर्फ दमन और शोषण ही समाज का यथार्थ नहीं है। समाज के यथार्थ में खुशी और गम दोनों शामिल होते हैं। केवल त्रासदी और नकारात्मकता को ही समाज का यथार्थ नहीं माना जा सकता। यदि समाज के यथार्थ में जीवन के सभी पक्षों को शामिल किया जाए, तो ही समानांतर सिनेमा को यथार्थवादी सिनेमा कहना ज्यादा उचित होगा। यदि इसमें 'अंकुर' जैसी फिल्म शामिल है तो 'हम साथ साथ है' को भी शामिल किया जा सकता है।

इन फिल्मकारों का रहा बड़ा योगदान: समानांतर और यथार्थपरक फिल्मों की बात करें, तो इस परंपरा को समृद्ध करने में कई फिल्मकारों का बेहद महत्वपूर्ण योगदान रहा है। 1953 में आई बिमल रॉय की 'दो बीघा जमीन' ने समीक्षकों की प्रशंसा के साथ व्यावसायिक सफलता प्राप्त की थी। इसके बाद बिमल रॉय ने 'बिराज बहू', 'देवदास', 'सुजाता' और 'बंदिनी' जैसी यथार्थपरक फिल्में बनाईं। ऐसी फिल्में बनाने वाले फिल्मकारों में गुरुदत्त भी थे। उनकी फिल्म 'प्यासा' को हिंदी सिनेमा की कालजयी फिल्म माना जाता है। अमेरिका की 'टाइम' पत्रिका ने इसे 'ऑल टाइम बेस्ट 100 फिल्म्स' में जगह दी है। समानांतर सिनेमा की नई शुरुआत 1969 में मृणाल सेन की फिल्म 'भुवन सोम' से माना जाता है। ऐसे ही श्याम बेनेगल 1973 में 'अंकुर' बनाकर समानांतर सिनेमा के नवसृजन के प्रमुख हस्ताक्षर बने। सन 1976 में मृणाल सेन ने 'मृगया' बनाई, जो मिथुन चक्रवर्ती की पहली फिल्म थी। श्याम बेनेगल की फिल्में 'अंकुर', 'मंथन' और 'भूमिका', मणि कौल की 'उसकी रोटी' और 'दुविधा'। सत्यजीत रे की 'पाथेर पांचाली', 'शतरंज के खिलाड़ी', 'सद्गति'। इन सभी फिल्म मेकर्स का समानांतर सिनेमा को समृद्ध करने में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। *